

संक्षिप्त समाचार

बहू ने 85 साल के ससुर को हाथ पकड़कर घसीटा

वीडियो सामने आने के बाद आरोपी मां-बेटी ने जहर खाया



मैहर (नप्र)। मैहर जिले के नादन गांव से झकझोर देने वाला वीडियो सामने आया है, जिसमें एक बहू अपने 85 वर्षीय बुजुर्ग ससुर को बेरहमी से घसीटते हुए दिख रही हैं। इस घटना के बाद पैदा हुए पारिवारिक तनाव के बीच आरोपी महिला और उसकी बेटी ने कीटनाशक खा लिया। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

विवाद की वजह- जमीन और बुजुर्ग की देखभाल- पुलिस के मुताबिक, बुजुर्ग छोटें लाल गौतम (85) के परिवार में जमीन और उनकी देख-रेख को लेकर लंबे समय से कलह चल रही थी। छोटें लाल के तीन बेटे (संत कुमार, सनत कुमार और अजय कुमार) हैं। छोटें लाल ने अपनी करीब ढाई एकड़ जमीन तीनों बेटों में बराबर-बराबर बांट दी थी।

अमेरिकी हमले में तीन भारतीयों की मौत पर भड़का भारत

यूएस राजनयिक को दूसरी बार बुलाकर कड़ी आपत्ति जताई

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओमान तट के पास कर्माशियल जहाज पर हुए हमले में तीन भारतीय नाविकों की मौत के मामले में भारत ने कड़ा रुख अपनाया है। भारत ने शुक्रवार को अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी जेसन मीक्स को तलब किया और ओमान के तट के पास भारतीय चालक दल के सदस्यों वाले कर्माशियल जहाजों पर अमेरिकी नौसेना के हमलों को लेकर कड़ा विरोध दर्ज कराया। इस हफ्ते में यह दूसरी बार है जब भारत अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी को तलब किया है।

राहुल गांधी बोले - 3 भारतीयों की मौत पर भी मोदी खामोश

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में भारतीय नाविकों की मौत को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया कि तीन दिनों में तीन जहाजों पर अमेरिकी हमलों में तीन भारतीयों की जान गई, लेकिन प्रधानमंत्री ने इस पर अब तक एक शब्द भी नहीं कहा।

तुम मुझे इंजॉय करा दो

फ़बिस्तान लेकर युवक को पहुंचा डॉक्टर टच करने लगा प्राइवेट पार्ट, लोगों ने जमकर पीटा

उमरिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में एक सिविल सर्जन डॉक्टर की पिटाई का मामला सामने आया है। यहां पदस्थ डॉक्टर केसी सोनी पर एक युवक ने यौन शोषण का आरोप लगाया। जिसके बाद भीड़ ने जमकर पिटाई की। वहीं, सिविल सर्जन डॉक्टर केसी सोनी ने मारपीट के दौरान सोने की अंगूठी और कैश पैसे छीनने का भी आरोप लगाया है।

खुद को बताया मैं यहां नया हूं

पीड़ित युवक ने बताया कि मैं सगरा चौराहे में बैठा था। वहां से केसी सोनी निकले और कहा कि बोले कि मुझे सिमरेंट पीना है। मैंने उन्हें पता बता दिया लेकिन उन्होंने कहा कि मैं उमरिया में नया हूं जिस कारण से मुझे कोई जानकारी नहीं है। उसके बाद मैंने उन्हें सिमरेंट लाकर दी। जिसके बाद उन्होंने कहा कि मैं अकेले और सड़क में नहीं पीता हूं। चलो कहीं किनारे में चलकर पीते हैं।

मानसून झारखंड-ओडिशा पहुंचा, 9 दिन में 19 राज्य कवर

मप्र-राजस्थान समेत 22 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट, बिहार में बिजली गिरने से 10 की मौत

भोपाल/जयपुर/लखनऊ/पटना (एजेंसी)। देश में मानसून लगातार आगे बढ़ रहा है। शुक्रवार को झारखंड और ओडिशा के कुछ हिस्सों में इसकी एंट्री हो गई। हालांकि, महाराष्ट्र में मानसून की रफ्तार अभी थोड़ी धीमी है।

अगले 3 दिन में मानसून के छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश में एंट्री करने की संभावना है। 4 जून को केरलम में दस्तक देने के बाद मानसून 9 दिन में 19 राज्यों तक पहुंच चुका है। मौसम विभाग के मुताबिक, गुजरात को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में प्री-मानसून एक्टिव है। आज मध्य प्रदेश और राजस्थान समेत 22 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। कई जगह 60 किमी तक की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। बिहार में 12 जिलों में आंधी-बारिश हुई। 24 घंटे में 10 डिग्री तक तापमान गिरा। बिजली गिरने से 10 लोगों की मौत हो गई।

इधर दिल्ली-एनसीआर और हरियाणा में गुरुवार रात कई



इलाकों में 70-80 किमी की रफ्तार से हवाएं चलीं। इससे तेज गमी से राहत मिली।

मप्र-राजस्थान में चलेगी धूल भरी आंधी, तेलंगाना में हीटवेव का अलर्ट- मौसम विभाग ने मध्य

प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और पंजाब समेत 22 राज्यों में आंधी-बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

अमेरिकी मौसम एजेंसी ने अल नीनो शुरू होने की पुष्टि की- अमेरिकी नेशनल ओशनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन ने अल नीनो शुरू होने की पुष्टि कर दी है।

मप्र श्योपुर में आंधी-बारिश से 4 लोगों की मौत

मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में शुक्रवार को आंधी-बारिश ने तबाही मचा दी। अलग-अलग हादसों में 4 लोगों की मौत हो गई। तेज हवाओं से रजपुरा गांव में दीवार गिर गई, जिससे एक ही परिवार के 4 लोग मलबे में दब गए। इनमें तीन की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक घायल है। राजस्थान रेफर किया गया है।

उम्र रोकने की दवा का पहली बार इंसान पर हुआ परीक्षण

उम्र के असर को उलटने वाला इंजेक्शन ग्लूकोमा पीड़ित को लगाया

अलग और सुरक्षित होती है। इससे साइड इफेक्ट्स पर नजर रखना भी आसान होता है।

- परीक्षण सफल रहा तो एंजिंग थेरेपी का नया दौर- लाइफ बायोसाइसेज के सीईओ जेरी मैकलॉघलिन ने कहा कि यह उनकी कंपनी या एंजिंग बायोलॉजी ही नहीं, पूरे मेडिकल साइंस के लिए संभावित रूप से बड़ा और परिवर्तनकारी पल है। अगर यह क्लिनिकल ट्रायल सफल रहा, तो एंजिंग थेरेपी में नया युग शुरू हो सकता है। लक्ष्य पूरे शरीर की कोशिकाओं को फिर से युवा और सक्रिय बनाना है, ताकि उम्र बढ़ने के साथ डीएनए के काम करने और उसके एक्सप्रेशन के तरीके में सुधार हो सके।



और बंदरों पर हुए टेस्ट में इसने उनकी रोशनी सफलतापूर्वक वापस लौटा दी थी। इस थेरेपी के लिए इंसानों की आंख को इसलिए चुना गया है, क्योंकि आंख शरीर के बाकी हिस्सों से

महाकाल सवारी के प्रसिद्ध ‘हाथी श्यामू’ को ‘वंतारा’ भेजने की साजिश!

मालिक सरमन का बड़ा आरोप, नहीं दिए ब्लड सैंपल



उज्जैन (नप्र)। भगवान महाकाल की सवारी में शामिल होने वाले प्रसिद्ध हाथी ‘श्यामू’ के स्वास्थ्य और उसके मालिकाना हक को लेकर चल रहा विवाद एक बार फिर गहरा गया है। गुरुवार को इंदौर रोड स्थित साईनाथ कॉलोनी में उस समय हाईवोल्टेज ड्रामा देखने को मिला, जब पन्ना टाइगर रिजर्व, इंदौर और उज्जैन के विशेषज्ञों की संयुक्त टीम हाथी का रूटीन चेकअप करने और ब्लड सैंपल लेने पहुंची। हाथी के मालिक और उनके परिजनों ने टीम का कड़ा विरोध करते हुए खून का नमूना लेने से साफ इनकार कर दिया।

बगैर ब्लड सैंपल लिए लौटी टीम- बता दें कि मौके पर काफी गहमागहमी और बहस के बाद टीम को बिना ब्लड सैंपल लिए, केवल मल-मूत्र

कमी भी गिर सकता है हाथी श्यामू: डॉक्टरों की चेतावनी

हाथी श्यामू की जांच करने व सैंपल लेने आए विशेषज्ञों और जांच टीम के अनुसार चिकित्सों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि हाथी श्यामू वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत शेड्यूल-1 श्रेणी का अति-सुरक्षित वन्यजीव है। उन्होंने चौंकाने वाला दावा करते हुए कहा, हाथी के पैरों में गंभीर समस्या है और अब उसके पैर अंदर की तरफ मुड़ने लगे हैं। ऐसी गंभीर स्थिति में वह चलते-चलते कभी भी अचानक गिर सकता है। डॉक्टरों के मुताबिक, बीमारी और उसके संक्रमण की सही स्थिति जानने के लिए ब्लड टेस्ट बेहद जरूरी था, जो विरोध के चलते नहीं हो सका।

उज्जैन (नप्र)। भगवान महाकाल की सवारी में शामिल होने वाले प्रसिद्ध हाथी ‘श्यामू’ के स्वास्थ्य और उसके मालिकाना हक को लेकर चल रहा विवाद एक बार फिर गहरा गया है। गुरुवार को इंदौर रोड स्थित साईनाथ कॉलोनी में उस समय हाईवोल्टेज ड्रामा देखने को मिला, जब पन्ना टाइगर रिजर्व, इंदौर और उज्जैन के विशेषज्ञों की संयुक्त

लखनऊ में इंडिगो फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

टॉयलेट में टिशू पेपर पर लिखी मिली बम से उड़ाने की धमकी

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ से दिल्ली जाने वाली इंडिगो फ्लाइट की आज चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट, लखनऊ पर इमरजेंसी लैंडिंग हुई। फ्लाइट हवा में ही थी, तभी टॉयलेट में एक टिशू पेपर मिला, जिस पर बम लिखा था। इसके बाद पायलट ने एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) को सूचना दी और इमरजेंसी लैंडिंग की अनुमति मांगी।

एटीसीने एयरपोर्ट अथॉरिटी और सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट किया, फिर लैंडिंग की अनुमति दी। इसके बाद सुबह 11:15 बजे फ्लाइट (6ई-2111) को लखनऊ एयरपोर्ट पर उतारा गया। सभी 184 यात्रियों और उनके सामान को नीचे उतारा गया। करीब 3 घंटे तक चेकिंग चली। बम निरोधक दस्ता और अन्य एजेंसियों के जवानों ने फ्लाइट की जांच की।

ममता की हार के 14 दिन बाद ही टीएमसी टूटी

बागियों का 18 मई को स्पीकर को भेजा लेटर सामने आया, 19 सांसदों के दस्तखत



कोलकाता (एजेंसी)। ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस(टीएमसी) में फूट अब तय है। विधानसभा के 80 में से 58 विधायकों के बगावत के बाद लोकसभा के बागी 19 सांसदों का लेटर शुक्रवार को सामने आया। मीडिया सूत्रों के मुताबिक इसे 18 मई को लोकसभा स्पीकर को भेजा गया था और अलग गुट बनाने की मांग की गई है।

इससे साफ है कि ममता की हार के 14 दिन बाद ही पार्टी में बगावत शुरू हो गई थी। इस चिट्ठी में यूसुफ पठान, सायोनी घोष,

19 बागी लोकसभा सांसदों के नाम			
लोकसभा सीट	सांसद	लोकसभा सीट	सांसद
बारासात	काकोली घोष दस्तौदार	घाटाला	दीपक अधिकारी (देव)
कूचबिहार	जगदीश चंद्र बसुनिया	झाड़ग्राम	काशीपद सोरेन
जागीपुर	खलीलुर रहमान	मेदिनीपुर	जून मालिया
बहरामपुर	यूसुफ पठान	बांकुड़ा	अरूप चक्रवर्ती
मुर्शिदाबाद	अबू ताहेर खान	बर्धमान पूर्व	डॉ. शर्मिला सरकार
बैरकपुर	पार्थ भौमिक	हावड़ा	प्रसून बंधोपाध्याय
मथुरापुर	बापी हलदार	बोलपुर	असित कुमार माल
जादवपुर	सायोनी घोष	बीरभूम	शताब्दी रॉय
कोलकाता दक्षिण	माला रॉय	हुगली	रचना बनर्जी
आरामबाग	मिताली बाग		

काकोली घोष और शताब्दी रॉय जैसे बड़े नाम शामिल हैं। एक नाम सामने नहीं आया है।

ईरान के साथ आज जंग खत्म हुई : ट्रम्प

अमेरिका-ईरान समझौते के लिए 6 मुद्दों पर सहमति, जिनेवा में होंगे हस्ताक्षर

वे कमी परमाणु हथियार नहीं बनाएंगे, ईरान बोला- अभी हमने कोई फैसला नहीं लिया

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने शुक्रवार को दावा किया कि अमेरिका ने ईरान के साथ युद्ध खत्म कर दिया है। एक वचुअल रैली में ट्रम्प ने अपने समर्थकों से यह बात कही। उन्होंने यह भी दावा किया कि ईरान कभी परमाणु हथियार नहीं बनाएगा। ईरान और अमेरिका के बीच रविवार को स्विट्जरलैंड के जिनेवा में समझौते पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। अमेरिका और ईरान के बीच यह अंतिम डील इसी हफ्ते के आखिर में हो सकती है। इसमें युद्ध रोकने और होर्मुज जलडमरूमध्य खोलने के साथ-साथ ईरान के परमाणु बम ना बनाने पर बातचीत होगी।

ईरान का दावा- होर्मुज स्ट्रेट पर हमारा फुल कंट्रोल- अमेरिका के साथ बढ़ते सैन्य तनाव के बीच ईरान ने दावा किया है कि होर्मुज स्ट्रेट पर उसका फुल कंट्रोल है। ईरानी सेना के वरिष्ठ अधिकारी एडमिरल हबीबोल्लाह सय्यारी ने कहा कि इस समुद्री मार्ग से कोई भी जहाज ईरान की अनुमति के बिना नहीं गुजर सकता। सय्यारी ने अमेरिका के उन दावों को भी खारिज किया, जिनमें कहा गया था कि हालिया हमलों में ईरानी नौसेना को भारी नुकसान पहुंचा है।



चरस तस्करी में फरार महिला गिरफ्तार

इंदौर । क्राइम ब्रांच ने चरस तस्करी के मामले में लंबे समय से फरार चल रही महिला आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है ।आरोपी स्वाती बुंदेला निवासी चित्रा नगर को जिला न्यायालय परिसर से घेराबंदी कर पकड़ा गया ।पुलिस के अनुसार स्वाती वर्ष 2025 में दर्ज पनडीपीएस एक्ट के एक प्रकरण में वांछित थी ।इसी मामले में 27 सितंबर 2025 को दीपक कुशवाह और रजत उर्फ वैभव बुंदेला को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 520 ग्राम चरस जब्त की गई थी, जिसकी कीमत करीब 5 20 लाख रुपए आंकी गई थी । जांच के दौरान स्वाती बुंदेला की भूमिका भी सामने आई थी, जिसके बाद से वह फरार चल रही थी ।क्राइम ब्रांच उसकी गतिविधियों और संभावित ठिकानों पर लगातार नजर रखे हुए थी ।गुरुवार को न्यायालय परिसर में मौजूद होने की सूचना मिलन पर टीम ने तत्काल कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया ।आरोपी से पूछताछ जारी है ।

क्रिप्टो करेंसी लूट का आरोपी गिरफ्तार

इंदौर । खुद को क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताकर युवक और उसके पिता का अपहरण कर पांच लाख रुपए से अधिक की क्रिप्टो करेंसी और मोबाइल लूटने वाले गिरोह के चौथे आरोपी को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है ।इंदौर क्राइम ब्रांच ने लंबे समय से फरार चल रहे आरोपी नितिन लोधी को सागर से पकड़ा । पुलिस के अनुसार झारकापुरी निवासी स्नेह परमार की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था ।आरोपियों ने क्राइम ब्रांच अधिकारी बनकर उसे और उसके पिता को कार में बैठाकर ले गए तथा जेल भेजने का डर दिखाकर 5773 यूएसडीटी (करीब 5.12 लाख रुपए) दूसरे खातों में ट्रांसफर करवा लिए ।मोबाइल भी छीन लिया था ।मामले में पहले तीन आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं । अब चौथे आरोपी की गिरफ्तारी के बाद पुलिस गिरोह के अन्य नेटवर्क की जांच में जुटी है ।

शादी के 4 माह बाद युवती ने फांसी लगाई

इंदौर । कनाड़िया थाना क्षेत्र में नवविवाहित युवक द्वारा आत्महत्या किए जाने का गंभीर मामला सामने आया है ।शादी के महज चार महीने बाद 42 वर्षीय विकास सोनी ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी ।मामले में पुलिस ने मर्ग जांच के बाद पत्नी, साली सहित अन्य ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का प्रकरण दर्ज किया है । जानकारी के अनुसार, घटना 8 जून की रात सर्व संपन्न नगर स्थित ऋषभ एचवलेव की है, जहां विकास सोनी ने अपने घर में फांसी लगा ली थी ।पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू की थी ।परिजनों ने आरोप लगाया कि शादी 25 फरवरी 2026 को हुई थी और उसी दिन करीब साढ़े आठ लाख रुपए के गहने ससुराल पक्ष ने अपने पास रख लिए थे ।इसके बाद लगातार मानसिक प्रताड़ना दी जा रही थी ।मृतक की बहन आरती सोनी ने बयान में बताया कि पत्नी आए दिन मायके चली जाती थी और संपर्क नहीं करती थी ।पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है ।

हाईटेशन तारों से बुजुर्ग की मौत

इंदौर । बाणगंगा थाना क्षेत्र के सांवेर रोड इलाके में शनिवार को एक दर्दनाक हादसे में 60 वर्षीय बुजुर्ग की जान चली गई ।छत की सफाई के दौरान वे हाईटेशन बिजली तारों की चपेट में आ गए, जिससे उन्हें जोरदार करंट का झटका लगा और मौके पर ही उनकी मौत हो गई ।जानकारी के अनुसार, सांवेर रोड निवासी सुरेश सिंह पिता कन्हैयालाल अपनी छत पर झाड़ू लगा रहे थे । इसी दौरान सफाई करते हुए वे पास से गुजर रहे चालू बिजली तारों के बेहद करीब पहुंच गए और अचानक संपर्क में आ गए । करंट का झटका इतना तेज था कि वे गंभीर रूप से झूलस गए ।परिजन दौड़ते उन्हें अस्पताल ले जाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी ।पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है ।

ट्रक की टक्कर से छात्र की मौत

इंदौर । सड़क हादसों में दो लोगों की मौत हो गई ।राऊ सर्कल पर एक ट्रक की टक्कर से निजी कॉलेज में पढ़ाई कर रहे छात्र की मौत हो गई, जबकि लसुड़िया क्षेत्र में भी ट्रक की चपेट में आने से एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया ।पुलिस ने दोनों मामलों में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है ।पुलिस के मुताबिक मृतक छात्र का नाम हर्षित सोलंकी (22) पुत्र अजय कुमार सोलंकी निवासी शिव सिटी है । गुरुवार रात वह बाइक से राऊ सर्कल होते हुए घर लौट रहा था ।इसी दौरान एक ट्रक ने उसे टक्कर मार दी ।हादसा इतना गंभीर था कि हर्षित की मौके पर ही मौत हो गई ।हर्षित आईपीएस कॉलेज में एमसीए सेकंड ईयर का छात्र था ।हादसे की सूचना मिलते ही परिवार इंदौर पहुंचा ।पुलिस ने हादसे में शामिल ट्रक को जब्त कर लिया है ।वहीं चालक मौके से फरार हो गया ।पुलिस उसकी तलाश कर रही है ।

ट्रक की चपेट में आया व्यक्ति

इंदौर । एक अन्य हादसे में लसुड़िया थाना क्षेत्र के एसआर कंपाउंड के पास अशोक (55) पुत्र गणपत, निवासी स्क्रीम नंबर– 140, ट्रक की चपेट में आ गए ।गंभीर रूप से घायल अशोक को उपचार के लिए एमवाय अस्पताल भेजा गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई ।पुलिस ने दोनों मामलों में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है ।

निजी कर्मचारी ने जान दी

इंदौर । एक अन्य मामले में झारकापुरी क्षेत्र के अहीर खेड़ी निवासी करण बलाई (28) ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली । गुरुवार को वह काम से घर लौटा और कमरे में चला गया । शाम को उसके पिता ने उसे फंदे पर लटका देखा ।परिजनों ने बताया कि करण की कुछ समय पहले शादी हुई थी, लेकिन पत्नी उसे छोड़कर चली गई थी ।इसी बात को लेकर वह परेशान रहता था ।हम्माल ने फांसी लगाई – आज्ञादा नगर क्षेत्र में हम्माली का काम करने वाले कन्हैया जायसवाल (40) ने भी गुरुवार रात फांसी लगाकर जान दे दी । रात करीब डेढ़ बजे उसकी पत्नी पानी पीने के लिए उठी तो उसे फंदे पर लटका पाया ।पुलिस के मुताबिक कन्हैया के चार बच्चे हैं ।प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि पति–पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था, जिसके बाद उसने यह कदम उठा लिया ।पुलिस दोनों मामलों की जांच कर रही है ।

शोरूम से सोने की इयररिंग चुराई

इंदौर । इंदौर के विजयनगर थाना क्षेत्र स्थित रिलायंस ज्वेल्स शोरूम में हुई चोरी के मामले में पुलिस ने बुधवार को अज्ञात युवक और युवती के खिलाफ केस दर्ज किया है ।पुलिस अब सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश में जुटी है ।पुलिस के मुताबिक फरियादी शाहरुख पुत्र शरीफ शेख निवासी कुर्बेर नगर, सिविल लाइन ने शिकायत दर्ज कराई है । शाहरुख आर्बिट मॉल के सामने स्थित सत्यराज बिल्डिंग में रिलायंस ज्वेल्स शोरूम में काम करता है । बताया गया कि 4 जून की रात शोरूम में आभूषणों की कार्डटिंग की जा रही थी ।इसी दौरान सोने की एक इयररिंग का सेट कम मिला ।इसके बाद शोरूम के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए, जिसमें एक युवक और युवती करीब 30 मिनट तक शोरूम में आभूषण देखते नजर आए ।आरोप है कि दोनों ने ज्वेलरी देखने के बहाने सोने की इयररिंग छिपाकर चोरी कर ली ।मामले में पुलिस को सीसीटीवी फुटेज की पेन ड्राइव भी सौंपी गई है ।ताला तोड़कर चोरी– वहीं सेंट्रल कोतवाली थाना क्षेत्र में बदमाशों ने दुकान का ताला तोड़कर करीब 2 लाख रुपए चोरी कर लिए ।पुलिस के अनुसार फरियादी रामचंद्र सूरजानी निवासी क्रांति कृपाली नगर की भैया इलेक्टिकल्स के नाम से मने सियागंज रोड पर दुकान है ।बदमाश दुकान का ताला तोड़कर दराज में रखी नकदी चुनकर फरार हो गए ।

लोकायुक्त छापे में बच्चों के पोषण बजट से लेकर आंगनबाड़ी तक पर उठे सवाल

इंदौर । महिला एवं बाल विकास विभाग के संयुक्त संचालक लक्ष्मीनारायण कंडवाल पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों के बीच लोकायुक्त की जांच में आय से 241 प्रतिशत अधिक संपत्ति मिलने का दावा किया गया। 10 जून को इंदौर लोकायुक्त की टीम ने उनके आवास और अन्य ठिकानों पर एक साथ छापामार कार्रवाई की थी। कार्रवाई के दौरान करोड़ों रुपये की संपत्तियों के दस्तावेज, आधुनिक जिम और सुपर मार्केट जैसी व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़े तथ्य सामने आए हैं। लोकायुक्त अधिकारियों के अनुसार कंडवाल के खिलाफ कार्रवाई कोई अचानक उठायी गया कदम नहीं थी।

करीब डेढ़ महीने तक चली गोपनीय जांच और दस्तावेजों के परीक्षण के बाद छापे की योजना बनाई गई। प्रारंभिक जांच में जो जानकारी सामने आई, उसके आधार पर उनकी घोषित आय और अर्जित संपत्ति के बीच बड़ा अंतर पाया गया। इसी के बाद लोकायुक्त ने भ्रष्टाचार निवारण कानून के तहत कार्रवाई को आगे बढ़ाया। जांच एजेंसियों का आरोप है कि कंडवाल ने अपने पद पर रहते हुए मिड-डे मील,



आंगनबाड़ी केंद्रों की मरम्मत, टेकेदारों के भुगतान, पोषण योजनाओं और विभागीय वित्तीय व्यवस्थाओं से जुड़े कार्यों में अनियमितताओं के जरिए अवैध संपत्ति अर्जित की। महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाएं सीधे बच्चों, गर्भवती महिलाओं, किशोरियों और जरूरतमंद परिवारों से जुड़ी होती हैं। ऐसे में इस स्तर के अधिकारी पर लगे आरोपों को गंभीर माना जा रहा है।

ब्रेक फेल होने की आशंका, 4 घायल, लोगों ने तोड़फोड़ की



टैकर में तोड़फोड़ की

घटना से नाराज लोगों ने टैकर पर अपना गुस्सा उतारते हुए उसमें तोड़फोड़ कर दी ।लोगों का आरोप था कि खराब स्थिति वाले वाहन को बिना पर्याप्त जांच के सड़क पर उतारा गया था, जिससे यह हादसा हुआ ।दुर्घटना के बाद टैकर चालक मौके से फरार हो गया । सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और हालात को नियंत्रित किया ।पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों का निरीक्षण कर मामले की जांच शुरू कर दी है । साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि टैकर की तकनीकी स्थिति क्या थी और हादसे के पीछे वास्तविक कारण क्या रहे ।

कहना है कि यदि टैकर कुछ और दूरी तक अनियंत्रित हालत में चलता रहता तो नुकसान कहीं अधिक हो सकता था। टक्कर की वजह से 3 से 4 कारें

और 2 बाइक क्षतिग्रस्त हो गईं। कई वाहनों के अगले हिस्से और बॉडी को भारी नुकसान पहुंचा है। दुर्घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

पुलिस बताकर कलेक्शन एजेंट से 30 लाख से भरा बैग लेकर फरार

मोबाइल बंद करवाया, नकदी लेकर भाग निकले बदमाश



में ले लिया और कहा कि हमारे पीछे आओ। कुछ ही क्षण बाद दोनों आरोपी बैग लेकर वहां से भाग निकले।

संकरी गलियों से होकर ओझल

मुकुल ने पुलिस को बताया कि मोबाइल दोबारा चालू करने में लगा रहा। इसी बीच बदमाश काफी दूर निकल गए। उसने उनका पीछा करने की कोशिश भी की, लेकिन

जांच में स्रोतों की पड़ताल

छापे के दौरान जिन संपत्तियों और निवेशों की जानकारी मिली है, उनका विस्तृत मूल्यांकन अभी जारी है ।लोकायुक्त अब जांच के दूसरे चरण में प्रवेश कर रही है, जिसमें संपत्ति के वास्तविक मूल्य, बैंक खातों, निवेश, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और आय के स्रोतों की पड़ताल की जाएगी ।इसके साथ ही यह भी जांच होगी कि अर्जित संपत्ति का संबंध किन–किन विभागीय निर्णयों और वित्तीय मंजूरियों से जुड़ा रहा है ।उल्लेखनीय है कि महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं के क्रियान्वयन और बजट उपयोग को लेकर समय–समय पर शिकायतें सामने आती रही हैं ।हालांकि इस मामले में लोकायुक्त की कार्रवाई ने विभागीय कार्यप्रणाली और वित्तीय निगरानी को लेकर नए सवाल खड़े कर दिए हैं ।जांच पूरी होने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि कथित तौर पर अर्जित की गई संपत्ति का वास्तविक स्वरूप क्या है और इसके पीछे कौन–कौन से आर्थिक स्रोत जिम्मेदार रहे हैं ।

देवास से लौट रहे केंद्रीय मंत्री के संबंधी की सड़क हादसे में मौत

कार में बैठते समय तेज रफ्तार बस ने टक्कर मारी

इंदौर । शिप्रा थाना क्षेत्र में गुरुवार देर रात हुए दर्दनाक सड़क हादसे में 29 वर्षीय प्रभात सिंह की मौत हो गई । प्रभात सिंह उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के निवासी थे और उनका संबंध रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के परिवार से बताया जा रहा है। हादसे के बाद उन्हें गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस के अनुसार प्रभात सिंह अपने तीन परिचितों के साथ किसी कार्य से देवास गए थे। रात करीब 11 बजे देवास से इंदौर लौटते समय शिप्रा क्षेत्र में उनकी कार सड़क किनारे रुकी हुई थी। इसी दौरान वे वाहन में वापस बैठने जा रहे थे, तभी पीछे से आ रही तेज रफ्तार बस ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि उनके सिर में गंभीर चोट आई और वे सड़क पर गिर पड़े। साथियों ने तत्काल उन्हें अरबिंदो अस्पताल पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी अस्पताल पहुंचे। विशेष अनुमति प्राप्त कर देर रात ही पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी कराई गई। शुक्रवार सुबह प्रभात सिंह का शव एयरलिफ्ट कर वाराणसी भेज दिया गया। इधर,हादसे के बाद बस चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। घटना स्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं, ताकि बस और चालक की पहचान की जा सके।



संपादकीय
अब राममंदिर चढ़ावे में घपला !
अयोध्या के श्रीराम मंदिर में आने वाले चढ़ावे के हिसाब में गड़बड़ी की खबरें न केवल चिंताजनक हैं बल्कि समूचे हिंदू समाज को शर्मसार करने वाली भी है, क्योंकि सवाल तो यह उठ रहा है कि हम भावान के काम में भी बेईमानी करने से बाज नहीं आते। आरोप है कि राम मंदिर में आने वाले चढ़ावे के हिसाब में हेराफेरी की जा रही है। दबी जुबान में यह बातें तो पहले से हवा में तैर रही थीं लेकिन सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर इसे डालकर देशव्यापी चर्चा और चिंता का मुददा बना दिया। उन्होंने पूछा था कि सनातन की आस्था से खिलवाड़ करने वाले ये लोग कौन हैं? अखिलेश ने चढ़ावे की गणना के सीसीटीवी फुटेज जारी करने की भी मांग की। भले ही केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने इस सवाल को यह कहकर टालने की कोशिश की यह नॉन सीरियस बात है, लेकिन गड़बड़ी के आरोप अब संत समाज और खुद भाजपा के नेता लगा रहे हैं। दरअसल, सपा सरकार में मंत्री रह चुके पवन पांडेय ने रविवार को दावा किया था कि राम मंदिर से 5 से साढ़े 7 करोड़ रुपए तक की चोरी की गई है। अखिलेश ने भी कहा था कि मामले पर सरकार की चुप्पी सदिग्ध है। कोर्ट को मामले का संज्ञान लेना चाहिए। इसी संदर्भ में भाजपा के सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह का यह बयान महत्वपूर्ण है कि इस घपले में बड़े-बड़े लोग शामिल हैं। मैं अभी उनका नाम नहीं ले सकता। समय आने पर बताऊंगा। हालांकि राम मंदिर ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय ने मामले को यह कहकर दबाने की कोशिश की कि कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट का समय-समय पर आंतरिक ऑडिट होता है। इसमें ट्रस्ट और एसबीआई बैंक के प्रतिनिधि शामिल रहते हैं। अभी तक ऐसी कोई भी बात सामने नहीं आई है। वैसे चंपतराय पर श्रीराम मंदिर के लिए भूमि अधिग्रहण के मामले में भी फर्जीवाड़ा करने के आरोप लगे थे। लेकिन उन पर कोई कार्रवाई न करते हुए उनका बचाव ही किया गया था। अब यह नया मामला सामने आ गया है। अयोध्या में भव्य राममंदिर बना है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन इसकी व्यवस्थाओं और हिसाब किताब की प्रामाणिकता को लेकर सवाल पहले भी उठते रहे हैं। ताजा आरोप यह है कि मंदिर में आने वाले चढ़ावे में से 7 करोड़ रू. की चोरी की गई है। राम मंदिर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने मंगलवार को ट्रस्ट के सदस्यों के साथ बैठक की थी। राम मंदिर परिसर के एक बंद कमरे में करीब 4 घंटे तक बैठक चली। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में चढ़ावे की राशि, उसके उपयोग और लेखा-जोखा जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। जाहिर है कि यह बैठक चढ़ावा चोरी के संदर्भ में ही हुई होगी। उधर प्रधानमंत्री कार्यालय ने भी आरोपों को गंभीरता से लेते हुए बुधवार को श्रीराम मंदिर ट्रस्ट से रिपोर्ट मांगी है। रिपोर्ट में बता कार्रवाई होने की संभावना है। पिछले दिनों राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक के बाद गया गया था कि चढ़ावे के रूप में अब तक ट्रस्ट को कुल 4,575 करोड़ रुपए मिले हैं। इनमें से मंदिर निर्माण कार्य पर 2,475 करोड़ रुपए खर्च किए गए। तब ट्रस्ट के पास लगभग 2100 करोड़ रुपए बचे थे। उल्लेखनीय है कि अयोध्या में राम मंदिर में रोजाना औसतन 1 करोड़रू. से ज्यादा का धान आता है। श्रीराम जन्मभूमि के अध्यक्ष महंत कलम नयन दास ने भी कहा कि यदि कहीं कोई गड़बड़ी हुई है तो उसकी निष्पक्ष जांच अवश्य होनी चाहिए। राम मंदिर के हिसाब किताब में पूर्ण पारदर्शिता जरूरी है। क्योंकि यह करोड़ों की आस्था का प्रश्न है।

दूरगामी फैसला
डॉ. सुधीर सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ई एमएस... कहने को फकत तीन अक्षर, मगर इन तीन अक्षरों ने बीती सदी के छठवें दशक में विश्व इतिहास में नयी इबारत लिख दी थी। अहम बात यह किनासिल के फलक पर लिखी यह इबारत अभी मिटी नहीं है, बल्कि उसकी चमक बकरार है। साक्षरता के लिए ख्यात परसबन्ज केरल के लोग उस परंपरा को जिलाए हुए हैं, जिसकी नींव ईएमएस ने डाली थी। ईएमएस यानी ईएमएस नंबूदिरिपाद। नंबूदिरिपाद यानी विश्व के प्रथम निर्वाचित कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री और विचारक, जिनके नेतृत्व में सन् 1957 में केरल राज्य विधायनसभा के चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने राजनीतिक आकाश में जीत का परचम लहरा दिया था, जिसकी चमक को सुदूर यूएसएतक में महसूस किया गया था।

13 जून, सन् 1909 को पेरिनतालमन्ना में जनमे नंबूदिरिपाद का पूरा नाम था एलमकुलम (ई) नमवकल (एम) शंकरम (एस) नंबूदिरिपाद। वे ईएमएस के नाम से जाने और पकारे गये। उन्होंने केरल की राजनीति को नयी दिशा दी और आधुनिक केरल की आधारशिला रखी। मलयाली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के अलावा उन्होंने साम्यवादी विचारधारा को कलम से समृद्ध किया। ब्राह्मण कुल और संपन्न जमींदार परिवार में जनमे ईएमएस ने परंपरा को तिलांजलि देकर केरल में जिस परंपरा का सूत्रपात किया, वह अवरोहो-अधार्तों के बावजूद अभी भी अशुष्ण है। मुख्यमंत्री पिनरारी विजयन उसी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई एम या माकपा) के निर्वाचित नेता हैं, जिसके संस्थापकों में ईएमएस प्रमुख थे। नंबूदिरिपाद के नाम में समाहित एलमकुलम वस्तुतः वह गांव है, जहां ईएमएस पैदा हुए थे। कुलीन ब्राह्मण परिवार में

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वाप पंकज प्रिंटेर्स एंड कैंपेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाधिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृप कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित। प्रधान संपादक उमेश त्रिवेदी कार्यकारी प्रधान संपादक अजय बोकिल संपादक (मध्यप्रदेश) विनोद तिवारी स्थानीय संपादक हेमंत पाल प्रबंध संपादक रमेश रंजन त्रिपाठी (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा) RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040 Mobile No.: 09893032101 Email- subahsaverenews@gmail.com ‘सुबह सवेरे’ में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नजरिया
राज कुमार सिन्हा
 लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।
पश्चिम बंगाल की राजनीति हमेशा से तेज राजनीतिक संघर्ष और नाटकीय घटनाक्रमों के लिए जानी जाती रही है। 199८ में ममता बनर्जी ने खुद कांग्रेस से बगावत कर तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) बनाई थी। ठीक वैसे ही आज टीएमसी में विभाजन हो रहा है और विद्रोही गुट खुद को ‘असली टीएमसी’ बता रहा है। टीएमसी अपने 28 साल के इतिहास के सबसे बड़े आंतरिक संकट से जूझ रही है। विधानसभा चुनाव में हार के बाद पार्टी के 58 विधायकों ने बगावत कर दी है। बागी गुट ने ममता बनर्जी के बजाय ऋतब्रत बनर्जी को विधायक दल का नया नेता चुन लिया है और पार्टी में टूट का दौर जारी है। संकट उस समय और गहरा गया जब ममता बनर्जी दिल्ली में इंडिया गठबंधन की बैठक में शामिल होने आई थी और उसी दौरान टीएमसी के कई असंतुष्ट सांसद बीजेपी नेता भूपेंद्र यादव के आवास पर बैठक करते नजर आए। संकट अब संसद तक पहुंच चुका है। राज्यसभा सांसद सुखेंद्रु शेखर राॅय ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। खबर आई कि कम से कम 20 असंतुष्ट सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर एनडीए में शामिल होने की इच्छा जताई है। हालांकि इस पर अंतिम निर्णय सामने नहीं आया है लेकिन इस घटनाक्रम ने पार्टी नेतृत्व की चिंता कई गुना बढ़ा दी है। टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी अपनी पार्टी को बिखरने से बचाने के लिए बागी विधायकों व सांसदों से व्यक्तिगत संपर्क साध रही हैं, लेकिन सफलता नहीं मिल रही है। पार्टी को टूटने से बचाने के लिए ममता ने संगठन में व्यापक बदलाव करते हुए अभिषेक बनर्जी के प्रभाव को सीमित किया है और पुराने, भरोसेमंद नेताओं को वापस कमान सौंपी है। तुणमूल कांग्रेस में पिछले कुछ वर्षों के दौरान अभिषेक बनर्जी का राजनीतिक प्रभाव लगातार बढ़ा है। पार्टी के भीतर कई फैसलों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। पार्टी के भीतर लंबे समय से दो अलग-अलग धाराओं की चर्चा होती रही है। एक ओर वे नेता हैं जो पार्टी के शुरुआती संघर्ष के दिनों से जुड़े रहे हैं, जबकि दूसरी ओर नई पीढ़ी के नेता हैं जो हाल के वर्षों में प्रभावशाली बने हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन दोनों समूहों के बीच बढ़ती दूरी ने

पार्टी के भीतर लंबे समय से दो अलग-अलग धाराओं की चर्चा होती रही है। एक ओर वे नेता हैं जो पार्टी के शुरुआती संघर्ष के दिनों से जुड़े रहे हैं, जबकि दूसरी ओर नई पीढ़ी के नेता हैं जो हाल के वर्षों में प्रभावशाली बने हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन दोनों समूहों के बीच बढ़ती दूरी ने

राजनीति
पार्टी के भीतर लंबे समय से दो अलग-अलग धाराओं की चर्चा होती रही है। एक ओर वे नेता हैं जो पार्टी के शुरुआती संघर्ष के दिनों से जुड़े रहे हैं, जबकि दूसरी ओर नई पीढ़ी के नेता हैं जो हाल के वर्षों में प्रभावशाली बने हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन दोनों समूहों के बीच बढ़ती दूरी ने संगठनात्मक संकट को और गहरा किया है। कई वरिष्ठ नेताओं को लगता है कि पार्टी में उनकी भूमिका पहले जैसी नहीं रही, जबकि नई पीढ़ी संगठन में अधिक प्रभाव चाहती है। इस गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल के बीच राष्ट्रीय स्तर पर ममता की पार्टी तुणमूल कांग्रेस को कांग्रेस में विलय करने का प्रस्ताव भी दिए जाने की चर्चाएं जोरों पर है। इधर मौजूदा टीएमसी बागी गुट का इरादा अलग पार्टी बनाने का नहीं है, वे खुद को असली तुणमूल करार दे रहे हैं। उनकी कोशिश पार्टी के संगठन चुनाव चिह्न और टीएमसी की पूरी राजनीतिक विरासत पर कब्जा करने की है। बागी गुट सीधे तौर पर ममता बनर्जी पर हमला नहीं कर रहा है। बागी नेताओं का कहना है कि वे अभी भी ममता बनर्जी का सम्मान करते हैं और पार्टी बनाने में उनके योगदान को मानते हैं।

संगठनात्मक संकट को और गहरा किया है। कई वरिष्ठ नेताओं को लगता है कि पार्टी में उनकी भूमिका पहले जैसी नहीं रही, जबकि नई पीढ़ी संगठन में अधिक प्रभाव चाहती है। इस गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल के बीच राष्ट्रीय स्तर पर ममता की पार्टी



तुणमूल कांग्रेस को कांग्रेस में विलय करने का प्रस्ताव भी दिए जाने की चर्चाएं जोरों पर है। इधर मौजूदा टीएमसी बागी गुट का इरादा अलग पार्टी बनाने का नहीं है, वे खुद को असली तुणमूल करार दे रहे हैं। उनकी कोशिश पार्टी के संगठन चुनाव चिह्न और टीएमसी की पूरी राजनीतिक विरासत पर कब्जा करने की है। बागी गुट सीधे तौर पर ममता बनर्जी पर हमला नहीं कर रहा है। बागी नेताओं का कहना है कि वे अभी भी ममता बनर्जी का सम्मान करते हैं और पार्टी बनाने

में उनके योगदान को मानते हैं। ऋतब्रत बनर्जी ने तो यहां तक कहा कि वे ममता बनर्जी से इस विपक्षी मोर्चे की मुख्य सलाहकार बनने का अनुरोध करेंगे। उनकी असली लड़ाई अभिषेक बनर्जी और उनके करीबी सलाहकारों के बढ़ते प्रभाव से है। बागी गुट बंगाल में

गुजर रही है। फिर भी टीएमसी के भीतर अभी भी एक बड़ा वर्ग ममता बनर्जी के साथ खड़ा दिखाई देता है लेकिन लगातार बढ़ती बगावत ने पार्टी के भविष्य को अनिश्चित बना दिया है। एक समय विरोधी दलों को चुनौती देने वाली तुणमूल कांग्रेस अब अपने ही संगठन को एकजुट रखने की चुनौती से जूझ रही है। पश्चिम बंगाल की राजनीति एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। जिस तुणमूल कांग्रेस ने तीन दशकों तक ममता बनर्जी के नेतृत्व में बंगाल की राजनीति को दिशा दी, आज वही पार्टी अपने इतिहास के सबसे गंभीर आंतरिक संकट का सामना कर रही है। यह संघर्ष केवल कुछ विधायकों और सांसदों की नाराजगी का मामला नहीं है, बल्कि नेतृत्व, संगठनात्मक संरचना, राजनीतिक विरासत और भविष्य की दिशा को लेकर गहरे मतभेदों का परिणाम है। बागी गुट द्वारा स्वयं को ‘असली टीएमसी’ घोषित करना इस संकट को और जटिल बना देता है, क्योंकि लड़ाई केवल सत्ता की नहीं बल्कि पार्टी की पहचान और विरासत की भी है। ममता बनर्जी अब उस दौर से गुजर रही हैं जहां उनकी राजनीतिक कुशलता, संगठन पर पकड़ और जनाधार की वास्तविक शक्ति की परीक्षा हो रही है। यदि वे असंतुष्ट नेताओं को साथ लाने और संगठन में विश्वास बहाल करने में सफल होती हैं तो टीएमसी इस संकट से उबर सकती है। लेकिन यदि बगावत का दायरा और बढ़ता है, तो यह केवल तुणमूल कांग्रेस ही नहीं बल्कि पूरे पश्चिम बंगाल के राजनीतिक समीकरणों को बदल सकता है। आने वाले महीनों में यह स्पष्ट होगा कि टीएमसी इस चुनौती की अवसर में बदल पाती है या बंगाल की राजनीति किसी नए अध्याय की ओर बढ़ती है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि पार्टी नेतृत्व इस संकट से कैसे बाहर निकलता है और क्या संगठन दोबारा पहले जैसी मजबूती हासिल कर पाता है?

आते हैं याद ईएमएस नंबूदिरिपाद

लेखकों को क्यों इतना पसंद आता है शिमला..!

शहरनामा
संजीव शर्मा
लेखक पत्रकार हैं।

आखिर, शिमला में ऐसा क्या है कि दुनिया भर के नामी लेखक यहां खिंचे चले आते हैं? कोई यहां रहकर किताब लिखना चाहता है तो कोई यहां की वादियों पर ही शब्द चित्र उकेरने लगता है। कुछ तो ऐसा खास है देवभूमि हिमालय प्रदेश और इसकी राजधानी में, जो हर छोटें बड़े रचनाकार को अपने मोहपाश में जकड़ लेता है। यह तो जाहिर बात है कि लेखन के लिए मानसिक शांति और एकांत की आवश्यकता होती है। शिमला के घने देवदार-चीड़ के जंगल, धुंध भरी सुबह और आमतौर पर बर्फ से ढकी पहाड़ियों की शांति लेखकों को रचनात्मक वातावरण प्रदान करती हैं। जिससे वे बाहरी शोर से दूर होकर अपने विचारों को शब्द दे पाते हैं। शायद, यही कारण है कि निर्मल वामा जैसे लेखकों की रचनाओं में शिमला का शांत और सुकून भरा माहौल स्पष्ट रूप से झलकता है।

हिमालय की गोद में बसे इस शहर का प्राकृतिक सौंदर्य भी कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर ने यहीं की वादियों से प्रभावित होकर अपनी प्रसिद्ध कविताओं की रचना की। यहां के पहाड़ों का बदलता मौसम, बर्फबारी और मनमोहक सूर्यास्त लेखकों की कल्पनाशीलता को नई उड़ान देते हैं। शिमला की एक अनूठी विशेषता यह भी है कि यह कभी भी केवल एक पहाड़ी क्षेत्र भर नहीं रहा बल्कि ओगों को प्रभाव के कारण यहीं सुह से ही दुनिया भर के बुद्धिजीवी, राजनेता और कलाकार आते रहे हैं। इस विविधता ने यहीं बौद्धिक माहौल बनाया और साहित्य, नाटक और कला जैसी कलाओं को फलने फूलने का भरपूर अवसर दिया। गैयत्री थिएटर जैसी विश्व स्तरीय जगहों ने भी रचनात्मक ऊर्जा को और विस्तार देने का काम किया।

इसके अलावा, कठिना काल में शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। यहीं के शीतें अफसरों, उनके परिवारों, नामी कलावंतों और आए दिन होने वाली पार्टियों के हार्ड-प्रोफाइल जीवन ने भी लेखकों को आपनिवेशिक समाज के प्रति गहरी और किस्सों पर लिखने के लिए भारपूर मसाला दिया। शिमला में लेखन के विस्तार का एक कारण यह भी है कि अंग्रेजी सत्ता का केंद्र होने के कारण यहां पठन पाठन की सबसे अच्छी सुविधाएं एवं केंद्र बने। इसके फलस्वरूप किलिंग कॉटन, सेंट्र एक्वर्ड्स और ऑकलैंड हाउस जैसे प्रतिष्ठित स्कूलों की मौजूदगी ने बचपन से ही छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि पैदा की। रिकन बॉन्ड इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान ही लिखना शुरू कर दिया था। वहीं, कई लेखकों के लिए शिमला उनकी यादों का हिस्सा है। यहीं की पुरानी इमारतें, संकरी गलियाँ और

ऐतिहासिक रिज एवं माल रोड लेखकों को अतीत की कहानियों की ओर ले जाते हैं। यही कारण है कि आज भी कई लेखक यहीं के हेरिटेज होम्स में रहकर लिखना पसंद करते हैं। शिमला के सहज,शांत और सुकून भरे पर्वतीय क्षेत्रों ने भी कई विख्यात देशी विदेशी लेखकों, कवियों, कहानोकारों को आकर्षित किया है। मसलन, गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर ने तो शिमला के बुकमैल्ड कॉटज को अपना सेकेंड होम ही बना लिया था। यहाँ उन्होंने अपनी प्रसिद्ध काव्य कृति ‘सोमार तरो’ की कई कविताओं की रचना की।

मशहूर लेखक निर्मल वामा का तो जन्म ही शिमला में हुआ इसलिए उनका प्रसिद्ध उपन्यास ‘लाल टोन की छत्र’ शिमला की सदियों और यहाँ के एकांत जीवन का जीवंत चित्रण करता है। उनकी कहानियों के पहले संग्रह ‘परिदे’ में भी इस पहाड़ी शहर की गहरी झलक मिलती है। जाने माने लेखक रुडयाई किपलिंग का परिवार शिमला में गर्मियों की छुट्टियाँ बिताता था। उनकी प्रसिद्ध कहानियों का संग्रह ‘लेन टेस प्रेम द हिस्स’ पूरी तरह से शिमला और उसके आसपास की पृष्ठभूमि पर आधारित है। उन्होंने ‘अंडर दे देवदास’ में भी यहीं के औपनिवेशिक समाज का सूक्ष्म चित्रण किया है। एक अन्य लोकप्रिय लेखक रिकन बॉन्ड ने अपनी स्कूली शिक्षा शिमला से ही पूरी की थी। उन्होंने अपनी पहली काव्यनिक रचना ‘नहंन मंयं’ इसी स्कूल के छात्रावास में रहते हुए लिखी थी। उनकी कई कहानियों में शिमला के रेलवे स्टेशन और यहीं के बागानों के संस्मरण मिलते हैं। जानी मानी लेखिका मीनाक्षी चौधरी ने यहीं रहकर शिमला को लोककथाओं और रहस्यों पर ‘घोस्ट स्टोरीज ऑफ शिमला हिस्स’ जैसी अत्यधिक लोकप्रिय पुस्तक लिखी है। लेखक राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें शिमला: द समर कैपिटल ऑफ ब्रिटिश इंडिया और शिमला ऑन फुट काफ़ी लोकप्रिय हैं। एक और मजेदार तथ्य यह भी है कि अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए पहले से विख्यात इस शहर को नामी लेखकों के ठिकानों ने भी पाठकों के बीच अलग पहचान दी है। ये बंगले/कॉटेज आज भी लेखकों से जुड़ी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। मसलन बुकमैल्ड कॉटज गुरुदेव ख्रींदनाथ टैगोर के कारण ज्यादा पहचाना जाता है क्योंकि वे यहीं लगभग आठ महीने रहे। वहीं, नॉर्थ बैंक और टेंडिल कॉटेज को रुडयाई किपलिंग के कारण राजा भसीन तो लेखन में शिमला के पर्याय हैं। इन्होंने शिमला पर 5 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें श

बहुराष्ट्रीय फूड चेन

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।



पिछले दो दशकों में भारत में बहुराष्ट्रीय फूड चेन का विस्तार अभूतपूर्व गति से हुआ है। महानगरों से शुरू हुई यह यात्रा अब छोटे शहरों और कस्बों तक पहुंच चुकी है। बहुत से लोगों का मानना है कि भारत में इनके आगमन से स्थानीय बाजार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, छोटे व्यवसायियों का धंधा मंदा पड़ा है। जबकि कुछ इसे स्थानीय बाजार को प्रतिस्पर्धा में उतरने के लिए तैयार होने और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के लिए उत्प्रेरक मानते हैं।

वस्तुतः मैकडॉनल्ड,केएफसी, डोमिनोज, बर्गर किंग और स्टारबक्स (McDonalds, KFC, Dominos, Burger King, Starbucks) जैसे वैश्विक ब्रांड केवल भोजन परोसने वाले प्रतिष्ठान नहीं रह गए हैं, बल्कि उन्होंने भारतीय उपभोक्ता संस्कृति, रोजगार के स्वरूप और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा की प्रकृति को भी प्रभावित किया है। इसलिए इनके प्रभाव को केवल सकारात्मक या नकारात्मक कहना उचित नहीं होगा; यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का एक जटिल तथा बहुआयामी परिदृश्य है। सबसे पहले यदि स्थानीय कारोबारियों पर प्रभाव की बात करें, तो बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने पारंपरिक ढाबों, छोटे रेस्तरां और नाश्ते की दुकानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इन कंपनियों के पास विशाल पूंजी, आक्रामक विपणन रणनीतियां, आधुनिक साज-सज्जा, मानकीकृत गुणवत्ता, डिजिटल भुगतान प्रणाली और तकनीकी आधारित सेवाओं का मजबूत आधार होता है। स्वाभाविक रूप से युवा और मध्यम वर्ग का एक बड़ा हिस्सा इनकी ओर आकर्षित होता है। परिणामस्वरूप अनेक छोटे भोजनालन ग्राहकों की घटती संख्या बड़ों की प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं।

इन फूड चेन ने बाजार में प्रतिस्पर्धा की परिभाषा भी बदल दी है। पहले मोहल्लों की चाय-नाश्ते की दुकानें अपने स्थानीय स्वाद, आत्मीयता और कम कीमत के कारण लोकप्रिय थीं, लेकिन अब उपभोक्ताओं के एक वर्ग के लिए ब्रांड वैल्यू, फूड एक्सपीरियंस और एंम्बिअंस भी महत्वपूर्ण कारक बन गए हैं। इसका प्रभाव भारतीय खान-पान संस्कृति पर भी दिखाई देता है। पिज्जा, बर्गर और फ्राइड

चिकन जैसे पश्चिमी व्यंजनों की बढ़ती लोकप्रियता ने कई स्थानों पर पारंपरिक भारतीय व्यंजनों की मांग को प्रभावित किया है। विशेष रूप से नई पीढ़ी के खान-पान की आदतों में उल्लेखनीय बदलाव देखा जा रहा है।

हालांकि इसका दूसरा पक्ष भी उठना ही महत्वपूर्ण है। बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने भारतीय छोटे व्यापारियों को आधुनिक व्यावसायिक पद्धतियां अपनाने के लिए प्रेरित किया है। आज अनेक स्थानीय रेस्तरां स्वच्छता, आकर्षक पैकेजिंग, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन ऑर्डर, होम डिलीवरी और ग्राहक सेवा की गुणवत्ता पर पहले की अपेक्षा अधिक ध्यान दे रहे हैं। कई भारतीय ब्रांडों ने इसी प्रतिस्पर्धा से प्रेरणा लेकर अपने व्यवसाय का सफल विस्तार किया है। इस दृष्टि से प्रतिस्पर्धा ने गुणवत्ता सुधार और नवाचार को भी बढ़ावा दिया है।

यदि बेरोजगार युवाओं के संदर्भ में देखा जाए, तो यह क्षेत्र रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण



माध्यम बनकर उभरा है। इन फूड चेन में बड़ी संख्या में युवाओं को वेटर, कैशियर, किचन स्टाफ, डिलीवरी कर्मी, सुपरवाइजर, मैनेजर तथा मार्केटिंग से जुड़े विभिन्न पदों पर काम मिला है। विशेषकर कॉलेज के विद्यार्थियों और कम अनुभव वाले युवाओं के लिए यह क्षेत्र शीघ्र रोजगार का अवसर प्रदान करता है। इससे अनेक युवाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला कदम रखने का अवसर मिला है। इसके अतिरिक्त इन संस्थानों में कार्य करने से युवाओं में समय प्रबंधन, टीमवर्क, ग्राहक सेवा, अनुशासन और पेशेवर कार्य संस्कृति जैसे व्यावहारिक दक्षताओं का विकास होता है। कई युवाओं ने यहां अनुभव प्राप्त करने के

बाद अपने स्वयं के छोटे खाद्य व्यवसाय या स्टार्टअप भी शुरू किए हैं। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को और अधिक बढ़ाया है। फिर भी इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है। इन नौकरियों का बड़ा हिस्सा अस्थायी, कम वेतन वाला और सीमित सामाजिक सुरक्षा वाला होता है। कर्मचारियों को अक्सर लंबे कार्य घंटे, प्रदर्शन आधारित दबाव और सीमित कैरियर सुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि बहुराष्ट्रीय फूड चेन ने भारत की बेरोजगारी समस्या का स्थायी समाधान प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने रोजगार के अवसर अवश्य बढ़ाए हैं, लेकिन उच्च गुणवत्ता वाले और दीर्घकालिक रोजगार की गारंटी बिल्कुल नहीं दी है।

अंततः कहा जा सकता है कि बहुराष्ट्रीय फूड चेन का भारत के स्थानीय बाजार पर प्रभाव दोधारी तलवार के समान है। एक ओर उन्होंने छोटे कारोबारियों के सामने कठिन प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की और पारंपरिक खाद्य संस्कृति को चुनौती दी, तो दूसरी ओर आधुनिक व्यापार पद्धतियों, सेवा क्षेत्र के विस्तार और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर स्थानीय खाद्य व्यवसायों को तकनीकी, वित्तीय और विपणन संबंधी सहयोग प्रदान करें। 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को व्यवहारिक रूप से सशक्त बनाते हुए यदि स्थानीय उद्यमों को प्रतिस्पर्धी बनाया जाए, तो वैश्वीकरण और स्थानीय अर्थव्यवस्था के बीच संतुलित एवं समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

मोदी नेतृत्व के 12 वर्ष

धर्मन्द्र सिंह लोधी

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्य



भा रत के लोकतांत्रिक इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनके नेतृत्व से राष्ट्रनिर्माण को एक नवीन दिशा मिली है और भारत ने विकास एवं प्रगति की ऊंचाइयों को स्पर्श किया है। विगत बारह वर्षों में भारत एक ऐसे ही प्रभावी नेतृत्व का अनुभव कर रहा है। यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी का नेतृत्व। मोदी जी के नेतृत्व का यह कालखंड एक ऐसे राष्ट्रीय पुनर्जागरण का अध्याय है, जिसमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रीय प्रगति और वैश्विक प्रतिष्ठा का अद्वितीय संगम दिखाई देता है।

श्रीमद्भगवद्गीता कहती है - तस्मादसक्तः सततम् कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरकर्म परमाप्नोति पुंरुषः॥ अर्थात् : 'आसक्ति रहित होकर निरंतर अपने कर्तव्य का पालन करने वाला पुरुष ही श्रेष्ठता प्राप्त करता है।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी आसक्ति रहित और बिना किसी अपेक्षा के प्रधानमंत्री के रूप में विगत बारह वर्षों से राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। मोदी जी के सार्वजनिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उनकी 'राष्ट्र प्रथम' की नीति रही है। उनकी नीतियों, निर्णयों, योजनाओं और उनकी कार्यशैली में राष्ट्रहित सर्वोपरि दिखाई देता है। उन्होंने राजनीति को हमेशा राष्ट्रव्याप् का माध्यम माना है और यही कारण है, कि उनका प्रत्येक कदम, उनका प्रत्येक निर्णय निरंतर भारत को सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में केंद्रित रहा है। उनका जीवन संघर्ष, अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रवाद की प्रेरक गाथा है। अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नेतृत्व करना, भारत की महान लोकतांत्रिक प्रणाली की जीवंत शक्ति का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली उन्हें समकालीन वैश्विक नेतृत्व में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वे निरंतर काम करने वाले, सूक्ष्मतम विवरणों पर ध्यान देने वाले और

प्रधानमंत्री मोदी की कार्यशैली उन्हें समकालीन वैश्विक नेतृत्व में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वे निरंतर काम करने वाले, सूक्ष्मतम विवरणों पर ध्यान देने वाले और परिणामोन्मुखी नेतृत्व के प्रतीक माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व में आधुनिक प्रशासनिक दक्षता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान एक साथ परिलक्षित होते हैं। उनकी जीवन शैली, अनुशासन, निर्णय क्षमता और कार्य के प्रति उनका समर्पण युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राष्ट्र के समक्ष उन्होंने स्वयं को 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया है, जो लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाता है।

डिजिटल नेटवर्क जैसे क्षेत्रों में तीव्र गति से हुए विकास ने भारत की आर्थिक क्षमता को नई ऊर्जा प्रदान की है।

परिणामोन्मुखी नेतृत्व के प्रतीक माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व में आधुनिक प्रशासनिक दक्षता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान एक साथ परिलक्षित होते हैं। उनकी जीवन शैली, अनुशासन, निर्णय क्षमता और कार्य के प्रति उनका समर्पण युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राष्ट्र के समक्ष उन्होंने स्वयं को 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया है, जो लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पिछले बारह वर्षों में भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे हैं। आधारभूत संरचना का विस्तार, डिजिटल क्रांति, वित्तीय समावेशन, स्वच्छता, ग्रामीण विकास, ऊर्जा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रयास हुए हैं। सड़क, रेल, हवाई अड्डे, बंदरगाह और डिजिटल नेटवर्क जैसे क्षेत्रों में तीव्र गति से हुए विकास ने भारत की आर्थिक क्षमता को नई ऊर्जा प्रदान की है।

प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, जलजीवन मिशन, स्वच्छ भारत मिशन जैसी अनेक योजनाओं के द्वारा आम आदमी के

जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है, और समाज की दिशा बदली है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत की सैन्य शक्ति सशक्त हुई है, जिसका प्रमाण हम लगातार देख रहे हैं। जम्मू-कश्मीर प्रधानमंत्री मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' को राष्ट्रीय आत्मविश्वास के अभियान के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसका उद्देश्य भारत को उत्पादन, नवाचार, कौशल और उद्यमिता के क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करना है। यह दृष्टि भारतीय युवा पीढ़ी, उद्यमियों, किसानों, महिलाओं, नवप्रवर्तकों को नए अवसर प्रदान करने का प्रयास करती है। आत्मनिर्भरता का यह विचार स्वदेशी क्षमता, स्थानीय संसाधनों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत के प्रति वैश्विक सम्मान बढ़ा है। उन्होंने वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद, अध्यात्म और सनातन परंपराओं को व्यापक पहचान दिलाई है। इससे नई पीढ़ी में अपने सांस्कृतिक गौरव और अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति विश्वास और सम्मान की भावना विकसित हुई है। अयोध्या में

भव्य राम मंदिर के निर्माण भारत में मोदी युग के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का जीवंत उदाहरण है। पिछले बारह वर्षों में भारत की वैश्विक उपस्थिति और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की आवाज प्रभावशाली रूप से स्थापित हुई है। माननीय मोदी के नेतृत्व में आज भारत को एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में देखा जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी एक जन-नेता और प्रेरणा-पुरुष के रूप में राष्ट्र के सामने उपस्थित हुए हैं। मोदी जी की सबसे बड़ी शक्ति जनता से उनका प्रत्यक्ष संवाद माना जाता है। वे करोड़ों भारतीयों की आकांक्षाओं, आशाओं और सपनों से स्वयं को जोड़ने का प्रयास करते हैं। उनकी 'मन की बात' हर भारतीय के हृदय में अस्मिक प्रेरणा का प्रवाह करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के बारह वर्ष भारतीय लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण यात्रा के रूप में देखे जा सकते हैं। इन बारह वर्षों में उन्होंने केवल भारत का ही नेतृत्व नहीं किया, बल्कि वैश्विक नेतृत्व और राजनीति को भी एक नई दिशा दी है। बारह वर्ष का यह कालखंड, विकास, आत्मनिर्भरता, सुशासन, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय आत्मविश्वास को सुदृढ़ करने की एक राष्ट्रीय अभिलाषा का प्रतीक है। उनका व्यक्तित्व कर्मयोग, राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समर्पण का प्रतीक है। 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना उनके सार्वजनिक जीवन की मूल प्रेरणा रही है। उनके नेतृत्व के इन बारह वर्षों का कालखंड भारत के आत्मविश्वास, आकांक्षा, लोककल्याण और नवोदय की एक अविस्मरणीय और युगान्तरकारी यात्रा है।

स्मृति शेष

आदित्य दुबे



कि सी राष्ट्र की पहचान केवल उसकी आर्थिक प्रगति या राजनीतिक उपलब्धियों से नहीं बनती, बल्कि उन व्यक्तित्वों से भी बनती है जो अपने कर्म, संघर्ष और उपलब्धियों से करोड़ों लोगों को प्रेरित करते हैं। भारतीय खेल जगत के लिए जसपाल राणा ऐसा ही एक नाम थे। उनके निधन का समाचार केवल एक महान निशानेबाज के जाने की खबर नहीं है, बल्कि उस प्रेरणा के खो जाने काएहसास है जिसने वर्षों तक भारतीय युवाओं को बड़े सपने देखने का साहसदिया। आज जब हम उनके जीवन को याद करते हैं, तो हमारे सामने केवल पदकों और रिकॉर्डों की सूची नहीं आती, बल्कि एक ऐसे खिलाड़ी की छवि उभरती है जिसने अपने जुनून, अनुशासन और अथक परिश्रम से खेलों को जीवन का मिशन बना लिया। उन्होंने उस दौर में भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रोशन किया, जब खेल सुविधाएँ सीमित थीं और खिलाड़ियों के लिए संसाधन आज की तुलना में कहीं कम थे। इसके बावजूद उन्होंने कभी परिस्थितियों को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। जसपाल राणा की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल उनके द्वारा जीते गए पदक नहीं थे। उनकी वास्तविक उपलब्धि वह विश्वास था जो उन्होंने देश के युवाओं के मन में

जगाया। उन्होंने साबित किया कि सफलता किसी बड़े शहर, विशेष पृष्ठभूमि या सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और संकल्प मजबूत हो, तो सीमित संसाधनों के बीच भी असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। आज के समय में, जब युवाओं के सामने सफलता के अनेक आकर्षक लेकिन त्वरितरास्ते प्रस्तुत किए जाते हैं, जसपाल राणा का जीवन हमें एक अलग ही संदेश देता है। उनका जीवन कहता है कि महानता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। सफलताका वास्तविक मार्ग निरंतर अभ्यास, आत्मसंयम, धैर्य और असफलताओं से सीखने की क्षमता से

होकर गुजरता है। यह संदेश आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को केवल तकनीक ही नहीं सिखाई, बल्कि खेल भावना,



एक खिलाड़ी के रूप में उन्होंने देश को गौरवान्वित किया, लेकिन एक कोच औरमार्गदर्शक के रूप में उन्होंने भारतीय खेलों को और भी बड़ी संपत्ति दी। उन्होंने

समर्पण और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का पाठ भी पढ़ाया। उनकी सोच पदकों से आगे जाकर खिलाड़ियों के व्यक्तित्व निर्माण पर केंद्रित थी। यही कारण है कि उनका प्रभाव

जसपाल राणा

जसपाल राणा ने वर्ल्ड शूटिंग चैम्पियनशिप और एशियन गेम्स में देश के लिए गोल्ड मेडल जीते थे। देश में निशानेबाजी को लोकप्रिय बनाने में जसपाल राणा की बड़ी भूमिका मानी जाती है। मूल रूप से उत्तराखंड के उत्तरकाशी निवासी जसपाल राणा को निशानेबाजी के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट सफलता के लिए साल 2002 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। एशियाई खेल के स्वर्ण पदक विजेता जन्म - 28 जून 1976 , उत्तराखण्ड अवसान - 12 जून 2026 (49 वर्ष) संतान - देवांशी राणा और युवराज सिंह राणा पिता - नारायण सिंह राणा पत्नी - रीना राणा ऊँचाई - 1.75 मीटर शिक्षा - दिल्ली: विश्वविद्यालय से खेल मैदानों की सीमाओं से कहीं अधिक हमारे समाज में अक्सर खेलों को केवल जीत और हार के नजरिए से देखा जाता है। लेकिन जसपाल राणा का जीवन हमें याद दिलाता है कि खेल चरित्र निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम है। खेल हमें संघर्ष करना सिखाते हैं,

हार को स्वीकार करना सिखाते हैं, टीम भावना का महत्व बताते हैं और सबसे बड़कर हमें अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार रहना सिखाते हैं। ये वही मूल्य हैंजिनकी किसी भी सफल समाज और राष्ट्र को आवश्यकता होती है। आज जब हम उनकी स्मृति को नमन कर रहे हैं, तब यह भी आवश्यक है कि हम उनके जीवन से सीख लेने का प्रयास करें। यदि हम वास्तव में उन्हें श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, तो हमें अपने बच्चों और युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना होगा। हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जहाँ प्रतिभा को अक्सर मिले, मेहनत को सम्मान मिले और खेलों को केवल मनोरंजननहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा जाए। जसपाल राणा का जीवन हमें यह सिखाता है कि एक व्यक्ति का संघर्ष और समर्पण लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। वे आज भले ही हमारे बीचनहीं हैं, लेकिन उनकी उपलब्धियाँ, उनके विचार और उनके द्वारा जगाई गई प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव जीवित रहेगी। कुछ लोग अपने लिए जीते हैं, कुछ अपने समय के लिए। लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे होते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीते हैं। जसपाल राणा उन्हींविरले व्यक्तित्वों में से एक थे। उनकी स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि। 'खिलाड़ी मैदान छोड़ सकता है, लेकिन उसकी प्रेरणा /हैं कभी मैदान नहीं छोड़ती।'

नाटक समीक्षा

सुनील सक्सेना



मध्य प्रदेश की वरिष्ठ नाट्य संस्था रंगायन का जन्म आर्टिस्ट कंबाइन ग्वालियर की कोख से लाभग पचास पहले हुआ था । मेरे ज्ञान के अनुसार आर्टिस्ट कंबाइन ग्वालियर देश की पहली कला संस्कृति को समर्पित संस्था है जिसका अपना स्वयं का नाट्य गृह था। इस रंगशाला में संस्था के नाटकों के अलावा देश की नामी गिरामी नाट्य मंडलियों ने अपनी प्रस्तुतियां दी।

भोपाल में रंगायन के संस्थापक स्व भाऊ खिरवड़कर थे। रंगायन को पोसने में उनकी महती भूमिका रही है। उसके बाद उनके पुत्र प्रशांत खिरवड़कर ने भोपाल के युवा रंगकर्मियों को जुटाकर रंगायन के बैनर तले दर्जनों नाटक का प्रदेश में और देश भर में मंचन किया । दुर्भाग्य से प्रशांत खिरवड़कर को निधन ने हमसे जल्दी ही छीन लिया । उनके निधन के बाद रंगायन लम्बे समय तक खामोशी रही ।

हाल ही में सम्पन्न 22वें स्मरण हबोब रंग आलाप नाट्य महोत्सव की चौथी शाम को रंगायन की टीम अपने पूर्व में मंचित नाटक चेकमेट को लेकर पूरे जोश, ऊर्जा और उमंग के साथ मौजूद थी। वे कलाकार जो रंगायन से किशोर अवस्था में जुड़े थे, जिनको संस्था ने संवारा, तैयार किया, उनके परिपक्व अभिनय को देखने का अवसर भोपाल के रंग प्रेमियों को इस नाटक में मिला ।

सिर्फ तीन पात्रों के इस सरसंसे थ्रिलर नाटक ने लगभग ढाई घंटे तक दर्शकों को अपनी गिरफ्त में रखा । हॉल में

मोदी जी के नेतृत्व में हो रहा जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास : टेकाम

जनजातीयमोर्चाके प्रदेश अध्यक्ष के प्रथम आगमन पर भव्यस्वागत

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जनजातीय मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज टेकाम के प्रथम जिला प्रवास पर जनजातीय मोर्चा के नेतृत्व में भव्य स्वागत कार्यक्रम सहित महत्वपूर्ण जिला बैठक जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पंकज टेकाम ने कहा कि जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास का संकल्प हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी साकार कर रहे है। पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने सबसे पहले जनजातीय समाज की चिंता करते हुए हमारे गांवों को सड़कों से जोड़ने का काम किया। आजादी के बाद कांग्रेस की सरकार बनी तो नागरिकों के हितों को ध्यान नही दिया गया। तत्करीबन छह दशको



तक न तो हमारे गांवों मे स्कूल थे न अस्पताल जिसके लिए हमें संघर्ष करना पड़ता था। शिवराज जी के नेतृत्व से लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अगुवाई में आज हमारे नायको को सम्मान मिल रहा है। श्री टेकाम ने कहा कि कांग्रेस की सरकारो ने हमारी संस्कृति और शौर्य को विरासत को लगातार छिपाने का प्रयास किया आज हमारे समाज का साहस और संस्कृति पाठ्यक्रंमो में शामिल हो रही है। बैठक को संबोधित करते केन्द्रीय राज्य

मंत्री दुर्गादास उड्के ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म परम पुज्य भूमि भारत में हुआ है। इसके साथ साथ हम भाजपा के साथ कार्य कर रहे हैं यह हमारा परम सौभाग्य है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जनजातीय समाज का विकास हो रहा है। विरासत को संजोते हुए हम गांव गली और मजरे टोले तक विकास की इबारत रच रहे है। जनजातीय मोर्चा अपने वैभवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर 2047 के विकसित भारत के संकल्प को

पूरा करने के लिए युवा तरूणाई के साथ प्रयास कर रहा है। जो निश्चित रूप से हमारे संस्कृति को सिद्ध करने वाला होगा। बैठक को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने कहा कि हमारा जिला बैतूल सुधाकर पंवार ने कहा कि आदिवासी समाज की चिंता अगर किसी ने की है तो वो पार्टी भारतीय जनता पार्टी है। कांग्रेस के शासन काल में आदिवासी समाज को महज वोट बैंक की तरह देखा जाता था। आज पूरे समाज के उत्थान को लेकर प्रयास दिखाई दे रहे है। भारतीय जनता पार्टी के मोर्चों में जनजातीय मोर्चा का नेतृत्व हमेशा प्रथम पॉक में दिखाई देता है। बैठक को संबोधित करते हुए मोर्चा के संभागीय प्रभारी एवं छिंदवाड़ा के महापीर विक्रम आह्राके ने कहा कि मोदी जी और मोहन जी के नेतृत्व में जो जनकल्याणकारी योजनाएं चल रही हैं उनका मतदान केन्द्र तक प्रचार और प्रभाव रहे इसके प्रयास हम सबको मिलकर करना है। जल जंगल की विरासत को अधिकार हमें भाजपा सरकार ने दिया है। धरती आवा योजना और

प्रधानमंत्री आवास योजना हमारे समाज के लिए वरदान साबित हो रही हैं। बैठक को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने कहा कि हमारा जिला बैतूल आदिवासीयों की वीर भूमि है जिसने अंग्रेज और कांग्रेस से लड़कर अपनी संस्कृति और विरासत को बरकरार रखा है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम और आपात काल के समय के नायको के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला। बैठक का संचालन जनजातीय मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष सुनील भलावी एवं अंत में आभार मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष सीताराम चढेकार ने व्यक्त किया। बैठक में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुवें, पूर्व जिलापंचायत अध्यक्ष सूरजलाल जावलकर, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य दिनेश परतेती, जनजातीय मोर्चा हरदा के जिलाध्यक्ष राहुल शाह , बैतूल अजन्ना मोर्चा जिलाध्यक्ष संतोष टेकाम मंचासीन रहे। बैठक में जनजातीय मोर्चा के जनप्रतिनिधि एवं जिला पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

बैतूल जनपद में विभिन्न क्लस्टरों में आयोजित होंगे जनकल्याण शिविर

बैतूल।शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं आमजन की समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से जिले में वलस्टर स्तर पर जनकल्याण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ग्राम पंचायत टाहली, साकादेही एवं गोरारुवर वलस्टर में 12 जून से 14 जून 2026 तक जनकल्याण शिविर आयोजित किए जाएंगे। वहीं खेड़ीसावलीगढ़, खंडारा एवं सोहागपुर वलस्टर में 15 जून से 17 जून 2026 तक शिविर लगाए जाएंगे।इन शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहकर आमजन की समस्याओं का निराकरण करेंगे तथा पात्र हितग्राहियों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाएगा।

ब्रिक्स देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल के आगमन से जगमग हुआ मांडू, गुंजायमान हो उठी वादियां

मेहमानवाजी और स्वागत- सत्कार से डेलीगेट्स हुए अभिभूत



राजेश शर्मा, धार। ऐतिहासिक मांडू नगरी की छटा आज देखते ही बनती थी। ब्रिक्स देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल के आगमन से जहा मांडू नगरी जगमग थी तो सुमधुर संगीत की गुंज से मानों गुंजायमान हो उठी हो वादियां। मांडू का जहाज महल आज ब्रिक्स के अतिथियों के लिए बना आकर्षण का केंद्र, जहाज महल देखते ही डेलीगेट्स बोले वाव वेरी ब्यूटीफुल प्लेस आदिवासी लोक संस्कृति भांगरिया नृत्य दल ने मांदल की थाप कुराट लगाकर नाचते गाते की अगवानी की। कलेक्टर राजीव रंजन मीना, और एसपी सचिन शर्मा ने मांडू की प्राचीन खुरासानी इमली और बुके देकर आये डेलीगेट का कंकू तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया। विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी माण्डू ने आज वैश्विक पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ी, जब ब्रिक्स प्रतिनिधि मण्डल के अंतर्राष्ट्रीय डेलीगेट्स यहाँ के गौरवशाली इतिहास और स्थापत्य कला से रूबरू हुए।

अतिथि देवो भव की परंपरा में शाही अंदाज में स्वागत, लोक संस्कृति की बिखरी छटा – जैसे ही ब्रिक्स देशों का अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल माण्डू

की ऐतिहासिक धरा पर स्थित ‘जहाज महल’ पहुँचा, पूरी नगरी ‘अतिथि देवो भव’ के जयघोष से गुंजायमान हो उठी। आजीविका समूह की दीदियों ने भारतीय परंपरा के अनुसार अक्षत-तिलक लगाकर और आरती उतारकर विदेशी मेहमानों का आत्मीय स्वागत किया। मुख्य द्वार पर स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए पारंपरिक लोक नृत्यों की ऊर्जा और थाप ने विदेशी मेहमानों को इस कदर मंत्रमुग्ध किया कि वे खुद भी कदम थिरकाने से रोक नहीं पाए।

‘बाग प्रिंट’ की वैश्विक गुंज, भारत के समृद्ध हस्तशिल्प और वोकल फॉर लोकल के प्रयासों की खुलकर प्रशंसा – भ्रमण के दौरान धार जिले की पहचान और विश्व प्रसिद्ध ‘बाग प्रिंट’ के विशेष स्टॉल्स अंतर्राष्ट्रीय मेहमानों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे। आजीविका समूह की दीदियों द्वारा तैयार किए गए बाग प्रिंट के वस्त्रों, डिजाइनों और इस पारंपरिक कला की बारीकियों को देखकर प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य हैरान रह गए। उन्होंने भारत के इस समृद्ध हस्तशिल्प और वोकल फॉर लोकल के प्रयासों की खुलकर प्रशंसा की।

इतिहास और संस्कृति का अद्भुत संगम



सीआईडी अधिकारी सत्यशील की भूमिका में हैं राहुल रस्तोगी। राहुल को बरसों बाद मंच पर देखना सुखद था। पिछले सालों में राहुल रंगमंच से जरूर दूर रहे लेकिन संस्कृति, कला, संगीत के कार्यक्रमों की संरचना के काम से जुड़े रहे। कई राष्ट्रीय स्तर के महोत्सव की परिकल्पना में राहुल का योगदान रहा है जो उनकी रचनात्मकता सक्रियता का प्रमाण है । साठ पार के राहुल भी हो गए हैं । सीआईडी जांच अधिकारी के तौर-तरीके,

उसके बातचीत में ठसक, रौब, गरियाना वे पूरे जोश खरोश और कुशलता से करते हैं ।

महुआ चटर्जी नचिकेत के पत्नी नंदिनी के रोल में हैं । महुआ भोपाल रंगमंच पर लगातार अपनी मौजूदगी बनाए हुए हैं । विविध भूमिकाओं में स्वयं को ढाल लेने में महुआ माहिर हैं । इस नाटक में भी वे आलादजें के अभिनय से स्त्री की मनोदशा को बखूबी उकेरती हैं ।

चेकमेट का भव्य सेट इस नाटक का चौथा किरदार है । जब नाटक में दो-तीन ही कलाकार हो तो सेट नाटक को बेलेंस करने में मदद करता है । कई बार ये खतरा भी बना रहता है कि सेट की भव्यता नाटक पर ही हावी हो जाती है और पात्र गौण हो जाते हैं । दर्शक नाटक से जुड़ने के बजाय बड़े सेट की आभा में ही बिंधा रहता है । चेकमेट में निर्देशन, अभिनय और मंच सज्जा इन तीनों का तालमेल प्रस्तुति को ऊंचे मयार पर ले जाता है।

अमूमन प्रशांत खिरवड़कर के नाटकों में रिअलैस्टिक सेट नहीं होते थे। वे आर्कटेक्ट थे। अपने नाटकों में पैनल, तख्ता से ही काम चला लेते थे । कम से कम प्रॉपर्टीज और अधिक से अधिक माइम का उपयोग करते थे। उनका यही ‘एक्स फैक्टर’ उन्हें अपने समकालीन निर्देशकों अलग पहचान देता है ।

इस नाटक के सेट में बेडरूम है, ड्राइंग रूम है, किचन है, जो कहानी की मांग भी थी और जरूरी भी था । इस काम को अंजाम दिया अनूप जोशी (बंटी) ने । अनूप भारत भवन के रंगमंडल से वर्षों तक जुड़े रहे थे । बड़े-बड़े निर्देशकों के साथ काम करके सेट डिजाइन और लाइटिंग के गुर उन्होंने सीखे हैं। उनका ये हुनर, करिश्मा चेकमेट के सेट में नजर

आ रहा था ।

नाटक के अंत में राहुल रस्तोगी ने टीम के परिचय के दौरान महत्वपूर्ण बात दर्शकों से कही जिसे रेखांकित करना समीचीन होगा कि हमें लोग शौकिया रंगकर्मी, अव्यावसायिक रंग संस्था कहते जरूर हैं लेकिन हमारे काम में चाहे वो अभिनय हो, संगीत हो, सेट डिजाइन हो, प्रकाश सज्जा हो, हम किसी प्रोफेशनल से कमतर नहीं हैं । हम पूरी शिद्दत और ईमानदारी से रंगकर्म करते हैं। उनका ये दावा पूरी प्रस्तुति के समय हर स्तर पर दिखा। दर्शकों ने दो सी – तीन सी रूपए के टिकिट लेकर नाटक देखा लेकिन ठगा हुआ महसूस नहीं किया। रंगायन संस्था से आए बिना कहे के अनुज खिरवड़कर ने नाटक में संगीत दिया है। संगीत संचालन में उनके सहायक रहे युग खडायते इन दिनों मंच से परे की गतिविधियों में काफी सक्रिय हैं। प्रस्तुति और मंच में सहयोग दिया कबीर रस्तोगी ने। थियेटर में बैकस्टेज का काम दोयम दर्जे का माना जाता है हकीकत में ये महत्वपूर्ण काम है । इसमें सहयोग करने वाले उन सिक्कों की तरह होते हैं जिन्हें उछालने पर आवाज नहीं आती । वे अपना काम खामोशी से लाइम लाइट में आए बिना करते रहते हैं । ये सच है इनके बिना कोई भी प्रस्तुति की सफलता संदिग्ध ही बनी रहती है । रंगायन की ये संभावनाओं से भरी नई जनरेशन, इस संस्था की परम्पराओं का परचम लहराएगी और आने वाले समय में और बेहतर नाटक देखने को मिलेंगे ऐसी अपेक्षा हम कर सकते हैं । सोशल मीडिया, रील्स से हटकर अगर कुछ अच्छा देखने का दिल करे तो चेकमेट के अगले मंचन को ट्रेक करते रहे हैं । ये नाटक जरूर देखें आप निराश नहीं होंगे ये मेरा वादा है ।

मैंटेनॅसके कारण आज बंद रहेगी बिजली

बैतूल।बिजली कंपनी द्वारा 14 जून को 33/11 केव्ही उपकेंद्र बडोरा में मैंटेनॅस कार्य किया जाएगा।मैंटेनॅस कार्य के चलते रविवार को सुबह 8 से 11 बजे तक द्वारका नगर, आरके पुरम, शशांक नगर, कोशल्या विहार कॉलोनी, रॉयल ग्रीन सिटी, मोक्षा रेजिडेंसी बालाजी रेजिडेंसी एवं अन्य द्वारका नगर फीडर में आने वाले क्षेत्रों में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड वितरण केंद्र बैतूल ग्रामीण के सहायक प्रबंधक ने बताया कि किन्ही अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

ग्राम सेमरीहरचंद में न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव के आतिथ्य में विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न



सोहागपुर । समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद में मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश नर्मदापुरम के निर्देशानुसार एवं अपर सत्र न्यायाधीश एवं तहसील विधिक साक्षरता अध्यक्ष श्री अतुल सक्सेना अपर सत्र न्यायाधीश सोहागपुर के आदेशानुसार ग्राम पंचायत सेमरी हरचंद में तहसील सोहागपुर मे विधिक साक्षरता शिविर न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव न्यायिक मजिस्ट्रेट सोहागपुर के मार्ग दर्शन में आयोजन किया गया । इस अवसर पर वक्ताओं ने निशुल्क विधिक सहायता कानूनों की विस्तृत सारागर्भित जानकारी दी गई। वहीं ग्रामीणों एवं उपस्थित जनों को महिला बाल अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के प्रावधानों को विस्तार से जानकारी दी गईइस विधिक साक्षरता सिविर मे ग्राम पंचायत सेमरी हरचंद के सरपंच चेतन मीना उप सरपंच, पंचायत सचिव ,आंगनवाडी सुपरवाइजर , आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं ग्रामीण जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित थे।इसी अवसर न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अपेक्षा यादव ने ग्रामीणों की उसुकता भरे प्रश्नों पर सारागर्भित जानकारी दी गई।

वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान घोषित



इंदौर। आपले वाचनालय एवं श्री सर्वोत्तम द्वारा उत्कृष्ट मराठी काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर स्मृति अखिल भारतीय सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। संस्था सचिव संदीप राशिनकर ने बताया कि शिर्भर से आई काव्य संग्रहों की प्रविष्टियों में से निर्णायक मंडल ने पुणे के कवि

राजन लाखे की कृति गझलायन का चयन कविवर्य वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान 2025 के लिए किया है. ज्ञान्तव्य है की इसके पूर्व सर्वश्री रविचन्द्र हडसनकर ,दासू वैद्य ,गौतेश गजानन शिंदे, संजय चौधरी , डॉ. विशाल इंगोले , राजू देसले , डॉ. बाला साहेब लबडे , प्रताप वाघमारे एवं अविनाश सांगोलेकर इस प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। उल्लेखनीय काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर काव्य साधना अ. भा. सम्मान 2025 के लिए बडोदे की अंजली आशुतोष मराठे की कृति सुमान , नवी मुंबई के मोहन काले की कृति अखेर मी माझीच समजूत घातली , ग्वाल्हेर के रामचंद्र किल्लेदार की कृति भाव मनातले कविता मनातल्या , बोंड के बाळासाहेब नागगोणे की कृति युद्ध पेटले आहे , नंदू मुलमुले, नांदेड की कृती अनंगवाणी , पालघर के स्वप्निल चाफेकर ‘प्रीत’ की कृति लेखणीने मेघ होता और इंदौर की स्मिता सराफ की कृती सांजवात... माझ्या मनात का चयन किया गया है। आपले वाचनालय राजेंद्र नगर में निकट भविष्य में होने वाले गरिमामय समारोह में ये सम्मान प्रदान किये जायेंगे ।

सुधीर देशपांडे की कृति को शरद जोशी सम्मान



भोपाल। खंडवा कवि साहित्यकार एवं व्यंग्यकार सुधीर देशपांडे की कृति ‘परमसत्ता से प्रेम’ को वर्ष 2024 का मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का शरद जोशी प्रादेशिक व्यंग्य कृति सम्मान प्रदान किये जाने की घोषणा साहित्य अकादमी के संचालक डॉ. विकास दवे ने की। इस अवसर पर डॉ श्रीराम परिहार, गोविन्द

गुंजन, कैलाश मंडलेकर, अरूण सातले, शैलेन्द्र शरण, गोविन्द शर्मा, रघुवीर शर्मा, श्यामसुंदर तिवारी, श्रीकांत साकळे, संतोष तिवारी, रश्मि दुधे, रश्मि स्थापक, माधुरी मालपानी, डॉ नीरज दीक्षित, डॉ अशोक नेगी, सुनील चौर, दीपक चाकरने, मनोज कुलकर्णी, प्रवीण लोढे, आनंद पेंडसे, संजय पाठक सहित बड़ी संख्या में साहित्यकारों एवं समाजजनों ने बधाई प्रेषित की है। ध्यातव्य है कि श्री देशपांडे के अब तक तीन काव्य संग्रह एक लघु निबंध संग्रह एवं एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी रचनाओं का निरंतर प्रकाशन विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में हो रहा है

संक्षिप्त समाचार

जिला पंचायत सीईओ ने की जनकल्याण शिविरों की तैयारियों की समीक्षा

अधिक से अधिक हितग्राहियों को लाभान्वित करने के लिए निर्देश



सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव ने बैठक आयोजित कर जनकल्याण अभियान के अंतर्गत जिले में 12, 15 और 16 जून को आयोजित होने वाले तीन दिवसीय जनकल्याण शिविरों की तैयारियों की समीक्षा की। बैठक में शिविरों के सफल संचालन, विभागीय समन्वय तथा पात्र हितग्राहियों तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाने के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। सीईओ श्रीमती यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनकल्याण शिविरों में अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं से लाभान्वित किया जाए तथा योजनाओं के प्रति आमजन को जागरूक करने के लिए प्रभावी प्रचार-प्रसार भी सुनिश्चित किया जाए। बैठक में शिविरों के स्थान निर्धारण, विभागवार व्यवस्थाओं, सूचना एवं सहायता केंद्रों की स्थापना तथा प्राप्त होने वाले आवेदनों के त्वरित निराकरण सहित विभिन्न व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई।

शिविर लगाकर किया जा रहा बिजली संबंधी समस्याओं का निराकरण



सीहोर (निप्र)। विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी शिकायतों के समाधान के लिए संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। महाप्रबंधक श्रीमती पूनम तुमराम ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं के साथ सीधा संवाद कर उन्हें त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना और उनकी शिकायतों का त्वरित निराकरण करना है। अभियान के तहत 10 जून को आष्टा संभाग अंतर्गत ग्राम लौरासखुर्द, करमनखेड़ी, सेंधोखेड़ी, आष्टा शहर वार्ड नं. 10, बड़लिया बरामद, एवं सीहोर संभाग अंतर्गत छपरी तालिका, आमलारामजीपुरा, नयापुरा, बरखेड़ाकुर्मी, सेमलीजदीद में शिविर लगाया गया।

ग्राम चिखलपाटी में रेत के अवैध

मंडारण पर 13 लाख 31 हजार 250

की अर्थदण्ड राशि की प्रस्तावित

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशानुसार घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम चिखलपाटी की भड़ंगा नदी क्षेत्र में खनिज रेत के अवैध भण्डारण के प्रकरण में खनिज विभाग ने 13 लाख 31 हजार 250 की अर्थदण्ड राशि की प्रस्तावित की है। विदित है कि 8 जून को घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम चिखलपाटी की भड़ंगा नदी क्षेत्र में खनिज रेत के अवैध भण्डारण की सूचना मिलने पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व शाहपुर के नेतृत्व में राजस्व, पुलिस एवं खनिज अमले द्वारा संयुक्त रूप से छापामार कार्रवाई की गई थी, जिसमें अवैध भण्डारणकर्ता चंद्रकांत पिता प्रशांत मंडल, निवासी फुलबेरिया तहसील घोड़ाडोंगरी के विरुद्ध मध्यप्रदेश खनिज अवैध खनन, परिवहन तथा भण्डारण का निवारण नियम 2022 के नियम 18 (2) के तहत कार्यवाही करते हुए कुल राशि 13, 31, 250 की शक्ति प्रस्तावित कर प्रकरण न्यायालय अपर कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पूर्व के अवैध में भी घोड़ाडोंगरी और शाहपुर क्षेत्र में रेत के अवैध भण्डारण पर खनिज नियमों के तहत कार्यवाही की गई है।

योजना से ऋण प्राप्त कर सचिन विनेखिया बने सफल व्यवसायी, दो युवाओं को भी दिया रोजगार

संत रविदास स्वरोजगार योजना बनी युवाओं के सपनों का आधार

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन्हीं योजनाओं में शामिल संत रविदास स्वरोजगार योजना आज युवाओं के लिए रोजगार का सशक्त माध्यम बन रही है। म.प्र. राज्य सहकारी अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम मर्यादित भोपाल के मार्गदर्शन में जिला स्तर पर जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित, नर्मदापुरम द्वारा यह योजना संचालित की जा रही है। योजना के अंतर्गत आवेदन प्रक्रिया समस्त पोर्टल के माध्यम से की जाती है। इसी योजना का लाभ लेकर इटारसी निवासी श्री सचिन विनेखिया ने स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सफलता की नई मिसाल पेश की है। श्री सचिन विनेखिया पिता श्री रमेश



विनेखिया एवं माता श्रीमती राजकुमारी विनेखिया निवासी रामनगर न्यूआई इटारसी, जिला नर्मदापुरम के रहने वाले हैं। उन्होंने बी.ए. रविदास स्वरोजगार योजना की जानकारी प्राप्त दौरान उन्होंने स्वयं का रोजगार प्रारंभ करने का

निर्णय लिया। वर्ष 2025-26 में श्री सचिन विनेखिया ने जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति कार्यालय में संपर्क कर संत रविदास स्वरोजगार योजना की जानकारी प्राप्त की। कार्यालय द्वारा उन्हें पात्रता, आवेदन प्रक्रिया

एवं आवश्यक दस्तावेजों संबंधी जानकारी दी गई। इसके बाद उन्होंने आवश्यक दस्तावेज तैयार कर ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत किया। आवेदन पत्र एवं दस्तावेजों की जांच उपरान्त उनका प्रकरण बैंक ऑफ इंडिया शाखा इटारसी को प्रेषित किया गया। बैंक द्वारा आवेदन एवं दस्तावेजों की जांच के बाद श्री सचिन विनेखिया को 4 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत कर वितरित किया गया। ऋण प्राप्त होने के पश्चात उन्होंने रेडीमेड कपड़ों का व्यवसाय प्रारंभ किया। उन्होंने अपने व्यवसाय में जींस, टी-शर्ट, पैंट-शर्ट, लोअर, कैपरी सहित विभिन्न प्रकार के रेडीमेड वस्त्र रखकर स्थानीय बाजारों एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्टॉल लगाकर विक्रय कार्य शुरू किया। धीरे-धीरे उनके व्यवसाय में उन्नति होने लगी और वे नियमित आय अर्जित कर अपने परिवार का बेहतर तरीके से भरण-पोषण करने लगे।



नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा की संवेदनशीलता के कारण एक 70 वर्षीय बुजुर्ग पिता को उनके स्वयं के मकान का पुनः कब्जा प्राप्त हुआ। प्रशासन की त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई से वृद्धों से परेशान वृद्ध दम्पति को राहत मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर इटारसी स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी श्री सत्यनारायण सोनी आत्मज श्री रामगोपाल सोनी ने अपनी स्वयं की आय से भूखंड क्रय कर मकान का निर्माण कराया था। उन्होंने मकान के एक हिस्से में रहने के लिए अपने पुत्र अनिल सोनी एवं पुत्रवधु सविता सोनी को रहने की

अनुमति दी थी। समय बीतने के साथ पुत्र एवं पुत्रवधु द्वारा वृद्ध दम्पति को ही मकान से बेदखल कर दिया गया। परेशान होकर बुजुर्ग दम्पति ने माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007 के अंतर्गत एसडीएम इटारसी न्यायालय में आवेदन प्रस्तुत किया। प्रकरण में एसडीएम न्यायालय से संतोषजनक न्याय नहीं मिलने पर बुजुर्ग दम्पति ने कलेक्टर न्यायालय में अपील प्रस्तुत की। मामले की सुनवाई उपरान्त कलेक्टर न्यायालय द्वारा 70 वर्षीय श्री सत्यनारायण सोनी के पक्ष में आदेश पारित करते हुए एसडीएम इटारसी को निर्देशित किया गया कि अनिल सोनी एवं उनके परिवार को मकान से बेदखल कर वृद्ध दम्पति को मकान का कब्जा दिलाया जाए। इसके बावजूद आदेश का पालन नहीं होने पर श्री सत्यनारायण सोनी एवं उनकी पत्नी ने पुनः कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर अपनी समस्या से अवगत कराया।

ग्राम स्तर पर आंखों की जांच से ग्रामवासियों को मिल रहा नजदीक के चश्मों का लाभ

►► पेस्बायोपिया परियोजना के अंतर्गत की गई 2,500 लोगों की स्क्रीनिंग, 800 लाभार्थियों को मिले निःशुल्क चश्मे

सीहोर (निप्र)। जिले में 40 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोगों में नजदीक दृष्टि दोष (पेस्बायोपिया) की समय पर पहचान एवं उपचार करने के उद्देश्य से संचालित पेस्बायोपिया परियोजना को उल्लेखनीय सफलता मिल रही है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा यह परियोजना भैरूदा एवं इछावर ब्लॉक में प्रारंभ की गई है। परियोजना के संचालन में

विलियम जे. क्लिंटन फाउंडेशन द्वारा तकनीकी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में पदस्थ सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा 40 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों की नजदीकी दृष्टि संबंधी जांच की जा रही है तथा आवश्यकता अनुसार उन्हें रीडिंग ग्लासेस (चश्मे) उपलब्ध



कराए जा रहे हैं। परियोजना प्रारंभ होने के लगभग डेढ़ माह के भीतर भैरूदा एवं इछावर विकासखंडों में करीब 2,500 लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जिनमें से लगभग 800 लाभार्थियों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए हैं। इससे लाभार्थियों को पढ़ने-लिखने एवं दैनिक कार्यों में काफी सुविधा प्राप्त हुई है। परियोजना के सकारात्मक परिणामों को देखते हुए अब इसका विस्तार जिले के बुधनी, आष्टा एवं

श्यामपुर विकासखंडों में भी किये जाने की योजना है। विस्तार के बाद जिले के पांचों विकासखंडों में 40 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को उनके निकटतम आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर निःशुल्क दृष्टि जांच एवं आवश्यकतानुसार चश्मा उपलब्ध कराया जाएगा। इस परियोजना के विस्तार से अधिक से अधिक लोगों को समय पर दृष्टि सुधार सेवाओं का लाभ मिलेगा तथा उनकी कार्यक्षमता एवं जीवन गुणवत्ता में सुधार होगा।

रिकॉर्ड प्रबंधन को और अधिक व्यवस्थित एवं पारदर्शी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए

अंशुल गुप्ता ने डीईओ कार्यालय का औचक निरीक्षण कर रिकॉर्ड प्रबंधन के निर्देश दिए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज बुधवार को जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) कार्यालय का औचक निरीक्षण कर कार्यालयीन व्यवस्थाओं, रिकॉर्ड संधारण तथा विभिन्न शाखाओं के कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रिकॉर्ड प्रबंधन को और अधिक व्यवस्थित एवं पारदर्शी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कार्यालय में रखे अभिलेखों, पंजीयों तथा अन्य दस्तावेजों का अवलोकन करते हुए निर्देशित किया कि सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पदनाम तथा उनके द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्यों की सूची कार्यालय में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की जाए। उन्होंने कार्यालय में रखी सभी अलमारियों की दो-दो चाबियां तैयार कराने के निर्देश भी दिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर अभिलेखों तक आसानी से पहुंच बनाकर कार्यों का सुचारु संचालन किया जा सके। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कहा कि प्रत्येक फाइल पर उसका विषय एवं संबंधित वर्ष अंकित होना अनिवार्य है।



विनिष्ठीकरण तथा अनुपयोगी एवं क्षतिग्रस्त सामग्री की नीलामी की प्रक्रिया प्रारंभ करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्थापना कक्ष, अनुदान शाखा एवं मान्यता शाखा का भी अवलोकन किया। साथ ही कार्यालय में पदस्थ भूत्य को निर्धारित युनिफॉर्म में उपस्थित रहने के निर्देश दिए। मुख्य लिपिक से आवक-जावक डाक व्यवस्था की जानकारी लेते हुए कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि आवश्यक सूचनाएं पारंपरिक डाक के बजाय ई-मेल के माध्यम से प्राप्त की जाएं, जिससे कार्यों में गति और पारदर्शिता बनी रहे। इस दौरान कार्यालय में स्कूल शिक्षा विभाग का सिटीजन चार्टर सुव्यवस्थित रूप से प्रदर्शित पाए जाने पर उन्होंने अधिकारियों की सराहना भी की।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने डीईओ कार्यालय में संचालित आधार केंद्र का भी निरीक्षण किया। उन्होंने वहां प्रदर्शित रेट लिस्ट की जांच की तथा निर्देश दिए कि जिले के सभी बीआरसी कार्यालयों में आधार केंद्र स्थापित किए जाएं और वहां निर्धारित शुल्क सूची अनिवार्य रूप से प्रदर्शित की जाए। उन्होंने कहा कि इससे आधार संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए नागरिकों को स्थानीय स्तर पर बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी।

परीक्षा परिणाम में भी एतिहासिक उपलब्धि, वर्ष 2022 में 12 वीं का परिणाम था 92 प्रतिशत, अब हुआ 98 प्रतिशत, वर्ष 2022-23 में जहां थे केवल 646 विद्यार्थी, अब हो गए 1460

संदीपनी विद्यालय शाहगंज - जहां आधुनिक शिक्षा, भारतीय संस्कार और उत्कृष्ट परिणामों का हो रहा संगम

सीहोर (निप्र)। प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित संदीपनी विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव और दूरदर्शी पहल के रूप में उभरे हैं। इन विद्यालयों का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पाठ्य ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उनमें जीवन मूल्यों, भारतीय संस्कृति, नेतृत्व क्षमता और आधुनिक कौशलों का विकास करना भी है। इसी कड़ी में सीहोर जिले का संदीपनी विद्यालय शाहगंज आज ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक प्रेरणादायी केंद्र बन चुका है। विद्यालय का मूल उद्देश्य उत्कृष्ट शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों में मजबूत जीवन मूल्यों और भारतीय संस्कारों का समावेश करना है।



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव अब जमीनी स्तर पर स्पष्ट दिखाई देने लगा है। संदीपनी विद्यालय शाहगंज इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां आधुनिक अधोसंरचना, डिजिटल शिक्षण संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षकों और विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा को नए आयाम दिए जा रहे हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों को अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यहां डिजिटल एवं स्मार्ट कक्षाएं, आरामदायक फर्नीचर, जूनियर साइंस लैब,

सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्काउट-गाइड, इको क्लब, एनसीसी और एनएसएस जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास सुनिश्चित किया जा रहा है। विद्यालय की बढ़ती लोकप्रियता और गुणवत्ता का प्रमाण यहां लगातार बढ़ती छात्र संख्या है। वर्ष 2022-23 में जहां विद्यालय में 646 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, वहीं वर्ष 2023-24 में यह संख्या बढ़कर 875 हो गई। वर्ष 2024-25 में 1375 तथा वर्ष 2025-26 में 1460 विद्यार्थियों का नामांकन दर्ज किया गया। यह निरंतर बढ़ता विश्वास दर्शाता है कि अभिभावक अब सरकारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को स्वीकार कर रहे हैं और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए संदीपनी विद्यालयों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

बुजुर्ग पिता को इंसाफ दिलाकर कलेक्टर ने दिलवाया स्वयं के मकान का कब्जा



नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा की संवेदनशीलता के कारण एक 70 वर्षीय बुजुर्ग पिता को उनके स्वयं के मकान का पुनः कब्जा प्राप्त हुआ। प्रशासन की त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई से वृद्धों से परेशान वृद्ध दम्पति को राहत मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर इटारसी स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी श्री सत्यनारायण सोनी आत्मज श्री रामगोपाल सोनी ने अपनी स्वयं की आय से भूखंड क्रय कर मकान का निर्माण कराया था। उन्होंने मकान के एक हिस्से में रहने के लिए अपने पुत्र अनिल सोनी एवं पुत्रवधु सविता सोनी को रहने की

अनुमति दी थी। समय बीतने के साथ पुत्र एवं पुत्रवधु द्वारा वृद्ध दम्पति को ही मकान से बेदखल कर दिया गया। परेशान होकर बुजुर्ग दम्पति ने माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007 के अंतर्गत एसडीएम इटारसी न्यायालय में आवेदन प्रस्तुत किया। प्रकरण में एसडीएम न्यायालय से संतोषजनक न्याय नहीं मिलने पर बुजुर्ग दम्पति ने कलेक्टर न्यायालय में अपील प्रस्तुत की। मामले की सुनवाई उपरान्त कलेक्टर न्यायालय द्वारा 70 वर्षीय श्री सत्यनारायण सोनी के पक्ष में आदेश पारित करते हुए एसडीएम इटारसी को निर्देशित किया गया कि अनिल सोनी एवं उनके परिवार को मकान से बेदखल कर वृद्ध दम्पति को मकान का कब्जा दिलाया जाए। इसके बावजूद आदेश का पालन नहीं होने पर श्री सत्यनारायण सोनी एवं उनकी पत्नी ने पुनः कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर अपनी समस्या से अवगत कराया।

राइट क्लिक



अजय बोकिल

लेखक सुबह सवरे के
कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

टीएमसी का कांग्रेस में विलीनीकरण या आत्म तर्पण?

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में करारी मात खाने और उसके बाद तार-तार हो रही ममता बैनर्जी की तुणमूल कांग्रेस पार्टी के अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में संभावित विलय की चर्चाएँ जोरों पर हैं। यह विलय कैसे, कब और किन शर्तों पर होगा, होगा भी या नहीं, यह टीएमसी का आईएनसी में विलीनीकरण होगा या फिर आत्म तर्पण होगा, इन सब सवालों के जवाब देर-सवेर मिलेंगे। लेकिन भारत की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से लोगों का टूटकर नई पार्टी बनाने और कुछ समय तक जन समर्थन के सागर में हाथ-पैर मारने की नाकाम अथवा आंशिक सफल कोशिशों के बाद वापस अपनी मूलगंगा में तिरोहित हो जाने का इतिहास बहुत पुराना है। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर 2026 तक 63 बार कांग्रेस से अलग होकर इसके नेताओं ने अपनी नई पार्टियां बनाईं। इनमें से भी केवल 8 पार्टियां अपने दम पर अथवा किसी गठबंधन के साथ सत्ता के सिंहासन तक पहुंचीं और कुल 13 पार्टियां किसी तरह अपना वजूद बचाए हुए हैं। बाकी काल के गाल में समा गईं। इनमें से भी अलग बनी केरल कांग्रेस के भी कई टुकड़े हो चुके हैं, जबकि कुछ ने भाजपा अथवा लेफ्ट का दामन थाम लिया। ऐसे में पश्चिम बंगाल में लगातार 15 साल तक सत्ता में रही तुणमूल कांग्रेस का भा.रा. कांग्रेस में विलीन होने पर क्या हथ्र होगा, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इस विलीनीकरण कथा का अंत जानते हुए भी यदि ममता बैनर्जी कोलकाता में अपनी पार्टी को बिखरने से बचाने के उपाय करने की जगह दिल्ली में रूककर अपने पुराने घर कांग्रेस में वापसी की गुहार लगा रही है तो इसी से समझा जा सकता है कि कभी दबंग नेत्री कहलाने और कांग्रेस को ठेंगे पर रखने वाली ममता बैनर्जी की मानसिक दशा क्या है। घर में लगी आग को बुझाने के बजाए वो दिल्ली में भाजपा का घर राख करने का शेखचिल्ली सपना देख रही हैं।

दिलचस्प बात यह है कि राष्ट्रीय मुख्यधारा की पार्टी कांग्रेस से अलग होकर नया दल बनाने और नाकाम होने के बाद घर वापसी की मजबूरी के पीछे भी नेताओं की अपना वजूद

बचाने की जड़ोजहद ही मुख्य कारण रही है। बतौर ममता बैनर्जी को ही लें तो 1998 में उन्होंने अपना राजनीतिक वजूद चमकाने के लिए कांग्रेस से अलग होकर तुणमूल कांग्रेस बनाई और सियासी दृष्टि से वो सफल भी रहीं। लेकिन हाल के चुनावों में करारी पराजय के बाद वो खुद इतनी असहाय महसूस करने लगीं कि उन्हें लगने लगा कि कांग्रेस की छत ही उनकी राजनीतिक लाज बचा पाएगी। यह हताशा जनित प्रतिशोध का विरल उदाहरण है।

यूं भी कांग्रेस से अलग होने के पीछे नेताओं की राजनीतिक महत्वाकांक्षा ही प्रेरक तत्व रही है। जब इन नेताओं को लगने लगता है कि वो अजेय प्रादेशिक क्षत्रप हैं और राष्ट्रीय पार्टी का छत्र छोड़कर खुद अपनी सल्तनत कायम कर सकते हैं तो वे अपनी निजी महत्वाकांक्षाओं में क्षेत्रीय अस्मिता, स्थानीय मुद्दों और जनाकांक्षा का तड़का लगाकर अपनी सुवाई फौज तैयार करते हैं, जो मुख्यतः व्यक्ति निष्ठा और सत्ता स्वार्थ में पगी होती है। इनका अपना कोई अलग वैचारिक आधार या आग्रह नहीं होता। ऐसी पार्टियों में व्यक्ति का चमत्कार ही मुख्य कारक होता है। जैसे ही सम्बन्धित नेता का जादू खत्म होता है, पार्टी धड़म से जमीन पर आ जाती है। सत्ता की सलाइन हटते ही पार्टी में बिखराव शुरू हो जाता है। ऐसे में ममता टाइट नेताओं को लगने लगता है कि अब उसी उद्गम स्थल पर फिर से राजनीतिक आचमन करना चाहिए, जहां से ये सफर शुरू हुआ था।

राजनीतिक हल्कों में चर्चा यह भी है कि बंगाल चुनाव नतीजों के बाद कांग्रेस की ओर से दबी जुबान में विलीनीकरण का ऑफर मूल पार्टी से अलग हुई वायएसआर कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार) को भी दिया गया है। लेकिन ये वापस कांग्रेस में शायद ही लौटें। इसका मूल कारण भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा ही है। अलग पार्टी बनाने और उसे सत्ता में विराजित करने के बाद कांग्रेस से विलगित नेता खुद को निरंकुश सुबेदार मानने लगते हैं क्योंकि सत्ता का असली स्वाद भी इसी निरंकुशता में है। ऐसे में किसी ‘बादशाह’ के अधीन काम करना उनकी फितरत में नहीं बैठता। शरद पवार

क्वील चेयर पर चलने के बाद भी यह माहौल बनाए रखते हैं कि उनमें अभी भी खम ठेंकने का दम है। लिहाजा कभी वो भाजपा तो कभी कांग्रेस को खुश करने वाले बयान देते रहते हैं। राजनीति में सत्ता ही अंतिम लक्ष्य होती है। सत्ताविहीन सियासी दल विपक्ष की भूमिका निभाते जरूर हैं, लेकिन कई बार उसका महत्व राजनीतिक मनोरंजन से ज्यादा नहीं होता। जहां तक विभाजन की बात है तो खुद कांग्रेस भी दो बार विभाजित हो चुकी है। और तो और कांग्रेस के प्रेरणा स्रोत महात्मा गांधी ने भी 1934 में पार्टी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था।

बहरहाल, कांग्रेस से अलग हुई 13 पार्टियों में से कुछ पूरी तरह सक्रिय हैं तो कुछ बराए नाम हैं। मसलन हिंदू महासभा (जिसे कांग्रेस से अलग होकर पं.मदन मोहन मालवीय ने 1915 में बनाया था), ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक (नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा कांग्रेस से अलग होकर बनाई गई यह पार्टी लंबे समय तक पश्चिम बंगाल में लेफ्टर के साथ सत्ता में भागीदार रही। संभव है कि बंगाल में बदली राजनीतिक परिस्थितियों के चलते वो भाजपा के साथ आ जाए, क्योंकि भाजपा भी नेताजी को भी अपना नेता मानती है)। इनके अलावा अ.भा. तुणमूल कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस (शरद पवार), केरल कांग्रेस, तमिल मनीला कांग्रेस, जम्मू कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, विदर्भ जनता कांग्रेस, नागालैंड पीपुल्स फ्रंट (नागालैंड में एनडीए के साथ सत्ता में), अ.भा. एन. आर कांग्रेस (यह पुदुच्चेरी में एनडीए के साथ सत्ता में), छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस तथा लोकतांत्रिक प्रगतिशील आजाद पार्टी। यह कांग्रेस से अलग हुई नवीनतम पार्टी है, जिसे पूर्व कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद ने 2022 में बनाया था। विगत 131 सालों में कांग्रेस से अलग होकर बनी बाकी 54 पार्टियों का आज कोई नामो निशान नहीं है। बाकी 9 में से भी 3 पर कांग्रेस की नजर इसलिए है, क्योंकि इनके पास कैडर और जनप्रतिनिधि हैं, जो कांग्रेस संसद और विधानसभाओं में कांग्रेस की ताकत में इजाफा कर सकते हैं। मसलन आंध्र प्रदेश की वायएसआर कांग्रेस के पास 4 लोस, 4 रास सांसद

और 11 विधायक हैं, जबकि राष्ट्रवादी शरद पवार के पास क्रमशः 8 लोस, 1 रास सदस्य तथा 3 विधायक हैं। इसी तरह तुणमूल कांग्रेस में विभाजन के बाद भी ममता बैनर्जी (और एक टूट न हुई तो) 9 लोस, रास 9 तथा 22 विधायक बाकी हैं। ये सब अगर कांग्रेस में मर्ज हो जाएं तो कांग्रेस की ताकत लोस में 21 तथा रास में 13 सांसदों एवं विधानसभाओं में कुल 29 विधायकों के रूप में बढ़ सकती है। इससे कांग्रेस कार्यकर्ता का मनोबल बढ़ेगा और आगामी चुनाव वह ज्यादा ताकत से लड़ सकती है, सीटों की ज्यादा दबंगई से सौदेबाजी कर सकती है। हालांकि जनप्रतिनिधियों के विलय की प्रक्रिया इतनी आसान नहीं है। लेकिन इससे भी बड़ी चुनौती नेताओंऔर पार्टी कैडर के भावनात्मक समन्वय और आपसी विश्वास की है। क्योंकि कुछ राज्यों में कांग्रेस से टूटी पार्टियां उसी के विरोध में राजनीति कर रही हैं।

इससे भी बड़ा सवाल यह है कि संभावित नई और एकीकृत कांग्रेस का शीर्ष नेता कौन होगा? आलाकमान कौन होगा? क्योंकि कांग्रेस राष्ट्रीय पार्टी होते हुए भी अपने चरित्र में व्यक्तिवाद, वंशवाद और विचारधारा का रामबाण चूर्ण है। चाहे अनचाहे और तमाम खामियों, आलोचनाओं के बावजूद नेहरू-गांधी परिवार ही कांग्रेस की संजीवनी बूटी है। जबकि अलग हुए क्षत्रपों ने उत्तर मुगल काल की तर्ज पर अपनी सल्तनतें कायम कर (पार्टी में विरोध के बावजूद) अपने राजवंश तैयार कर लिए हैं। जैसे कि ममता बैनर्जी के वारिस अभिषेक बर्नजी, शरद पवार की वारिस सुप्रिया सुले हैं। जबकि वायएसआर कांग्रेस के जगन मोहन रेड्डी के बच्चे अभी पढ़ रहे हैं। लेकिन वहां भी जल्द ही किसी परिजन की ताजपोशी हो सकती है। इन नेताओं की पहली चिंता भी वंशजों की ताजपोशी है। ऐसे में कांग्रेस में केन्द्रीय वंशवाद और क्षेत्रीय वंशवाद में कितना तालमेल रह पाएगा, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और वर्चस्व की टकरावट क्या मोड़ लेगी, कौन कितना झुकेगा, क्या ममता भाजपा को हराने हर मुमकिन समझौता करेगी या फिर कांग्रेस एक नए संघीय दल के रूप में उभरेगी, यह देखने की बात है।

टिवशा शर्मा के पिता की शिकायत से केस में नया मोड़

समर्थ की शादी में डांस करनेवाले वकीलों के खिलाफ शिकायत

भोपाल (नप्र)। बहुचर्चित टिवशा शर्मा की मौत के मामले में सीबीआई की जांच जारी है। इसी बीच, टिवशा के पिता ने मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में शिकायत दर्ज कराई है और ‘लीगल एड डिफेंस काउंसिल स्क्रीन’ से जुड़े कुछ वकीलों की भूमिका की जांच की मांग की है। टिवशा शर्मा के पिता नवनिधि शर्मा ने मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण और मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस विवेक रूसिया के समक्ष शिकायत दर्ज कराई है।

अधिकारी की भूमिका पर भी उठे सवाल



उन्होंने कानूनी सहायता प्रणाली से जुड़े कुछ वकीलों और एक अधिकारी की भूमिका की जांच कराने की मांग की है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को कानूनी सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था के तहत नियुक्त कुछ वकील आरोपी पक्ष का समर्थन करते नजर आए। शिकायत के अनुसार, इन वकीलों की नियुक्ति भोपाल में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में गिरिबाला सिंह के कार्यकाल के दौरान हुई थी। समर्थ की शादी में किया था डांस- शर्मा ने शिकायत के साथ एक तस्वीर भी साँपी है, जिसमें लीगल एड डिफेंस काउंसिल स्क्रीम के असिस्टेंट एडवोकेट श्रेयस सक्सेना को समर्थ सिंह की शादी में नाचते हुए दिखाया गया है। शिकायत में यह भी दावा किया गया है कि 15 मई को अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान सक्सेना कोर्ट में आरोपी के निजी वकील के साथ मौजूद थे। टिवशा शर्मा के पिता ने चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल रीना वर्मा का नाम भी शिकायत में शामिल किया है। लीगल एड वकीलों ने सक्रिय भूमिका निभाई- उन्होंने सवाल उठाया है कि जब आरोपी के पास पहले से निजी वकील मौजूद था, तो लीगल एड वकीलों ने सक्रिय भूमिका क्यों निभाई। इसके अलावा, ब्यूटी पार्लर और बाद में विवाह समारोह में देखे गए एक अज्ञात व्यक्ति की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं। शिकायत में उस व्यक्ति की पहचान तथा घटनाक्रम में उसकी भूमिका को लेकर स्पष्टीकरण मांगा गया है। अदालत में टिवशा शर्मा के परिवार की ओर से पैरवी कर रहे वकील अंकुर पांडे ने कहा कि यह मामला संबंधित अधिकारियों के समक्ष रख दिया गया है। पांडे ने शुक्रवार को कहा, हमने संबंधित अधिकारियों को शिकायत भेज दी है और अब इस मामले में कार्रवाई का इंतजार कर रहे हैं। शिकायत में लीगल एड वकीलों की भूमिका और आरोपी के साथ उनके कथित संबंधों की निष्पक्ष जांच की मांग की गई है। साथ ही, अग्रिम जमानत याचिका की सुनवाई के दौरान हुए कानूनी प्रतिनिधित्व की समीक्षा करने की भी मांग की गई है।

16 जून को खत्म होगी रिमांड

इस बीच, टिवशा शर्मा की मौत के मामले में सीबीआई की जांच जारी है। पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश गिरिबाला सिंह और उनके बेटे समर्थ सिंह की न्यायिक हिरासत 16 जून को समाप्त हो रही है। एजेंसी उस दिन दोनों को अदालत में पेश करेगी, जहां यह तय किया जाएगा कि उनकी न्यायिक हिरासत बढ़ाई जाए या आगे की पूछताछ के लिए पुलिस रिमांड दिया जाए। सीबीआई ने पहले अदालत को बताया था कि आवश्यकता पड़ने पर वह रिमांड की मांग करेगी। हालांकि, 2 जून को भोपाल सेंट्रल जेल भेजे जाने के बाद से अब तक किसी रिमांड की मांग नहीं की गई है।

रिटर्निंग ऑफिसर की पृष्ठभूमि आरएसएस की जीतू पटवारी बोले- जीत तका प्रमाण पत्र देने सुबह ही पहुंच गए, हमसे मिले तक नहीं



भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट ने मीनाक्षी नटराजन की याचिका के मामले में कांग्रेस को बड़ा झटका दिया है। मध्य प्रदेश से कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन की याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है। राज्यसभा चुनाव में रिटर्निंग ऑफिसर ने उनकी याचिका को खारिज कर दिया था। जिसके बाद कांग्रेस ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। लेकिन कोर्ट ने इस मामले में लगाई गई याचिका को खारिज कर दिया।

हमसे कहा गया 11 बजे मिलेंगे- लेकिन जब हम उम्मीदवारी निरस्त करने के विरोध में भोपाल चुनाव आयोग ऑफिस के सामने बैठे रहे, वहीं सीए तो कोई संज्ञान नहीं लिया गया और हमसे कहा

रिटर्निंग ऑफिसर की पृष्ठभूमि पर उठाए सवाल

याचिका खारिज होने के बाद कांग्रेस ने टीवीट कर बीजेपी पर निशाना साधा है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा- मीनाक्षी नटराजन के नामांकन मामले में जो रिटर्निंग ऑफिसर है, उसकी पृष्ठभूमि संघ की है। इससे पहले जब एक विधायक ने सदस्यता ली थी, तब भी उनकी भूमिका संदिग्ध थी। कल जब भाजपा के तीन राज्यसभा सांसद चुने गए तो रिटर्निंग ऑफिसर सुबह 8:30 बजे ही ऑफिस पहुंच गए थे।

मिनी ट्रक में जा घुसी बाइक चचेरे भाइयों की मौत

बिना बताए घर से निकले थे दोनों, बड़ा भाई बोला- बहन की शादी थी

हरदा (नप्र)। हरदा के हंडिया थाना क्षेत्र में गुरुवार रात बाइक सवार दो चचेरे भाई मिनी ट्रक में जा घुसे। घटना स्थल पर ही दोनों की मौत हो गई। घटना कुसिया के पास करीब साढ़े 9 बजे की है। जानकारी के अनुसार बाइक सवार दोनों चचेरे भाई बिना बताए घर से निकले थे। घर पर बहन की शादी थी। इसी दौरान उनकी बाइक



पीछे से आइशर वाहन में जा घुसी। घटना की सूचना मिलते ही हंडिया पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने दुर्घटना स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई शुरू की। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया है।

टैक्सी ड्राइवरों ने कटोरा लेकर मांगी भीख

फटे कपड़ों में ओला-उबर की नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन, बोले- भीख मांगने की नौबत आई

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में ऐप आधारित टैक्सी सेवाओं के खिलाफ शुक्रवार को अनोखा प्रदर्शन देखने को मिला। भोपाल टैक्सी चालक संघ के बैनर तले बड़ी संख्या में ड्राइवर बोर्ड ऑफिस चौराहे पर इकट्ठा हुए और फटे कपड़े पहनकर कटोरा लेकर प्रतीकात्मक भीख मांगते नजर आए। ड्राइवरों ने ओला, उबर और रैपिडो कंपनियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और आरोप लगाया कि कंपनियों की नीतियों ने उन्हें इस हालात में पहुंचा दिया है। प्रदर्शन के दौरान एक ड्राइवर ने भावुक होकर कहा, भैया, कंपनियां ने हमारी हालत ऐसी कर दी है कि कपड़े तक नहीं खरीद पा रहे। चड़ी-बनियान तक फट चुकी है। रेट इतने कम हैं कि गाड़ी चलाना भी मुश्किल हो गया है।

9 रू. प्रति किमी मिल रहा, खर्च 11 तक: संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष श्रवण कुमार शर्मा ने बताया कि वर्तमान में ड्राइवरों को औसतन रू. 9 प्रति किलोमीटर तक ही किराया मिल रहा है, जबकि डीजल, पेट्रोल और सीएनजी के बढ़े दामों के कारण गाड़ी का खर्च रू. 11 प्रति किलोमीटर तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा, दो में से एक ही काम हो पा रहा है, या तो घर चला लें या गाड़ी की क्रिस्त



भरें। दोनों एक साथ संभव नहीं है।

सरकार और कंपनियों पर अनदेखी का आरोप- महामंत्री राजेश कुमार नावले ने कहा कि आरटीओ की गाइडलाइन के अनुसार जो किराया तय किया गया है, उसका पालन कंपनियां नहीं कर रही हैं। उन्होंने बताया, 2014-15 में जब कंपनियों ने भोपाल में काम शुरू किया था, तब गाइडलाइन का पालन हुआ। लेकिन बाद में मनमानी शुरू हो

गई और अब हालात ऐसे हैं कि ड्राइवरों का जीना मुश्किल हो गया है।

आश्वासन मिलता है, समाधान नहीं- चालकों का कहना है कि वे लंबे समय से अपनी मांगें उठा रहे हैं, लेकिन हर बार केवल आश्वासन देकर मामला टाल दिया जाता है। एक चालक ने कहा, निर्णय कुछ नहीं निकलता, बस आश्वासन देकर निकल जाते हैं।